धर्मश्री

अप्रैल से जून २०२१

रमणरेती, संत समागम

पू. आनंदमूर्ति गुरु माँ

विष्णुसहस्रनाम अंकित वस्त्रसमर्पण

वास्तु गणेश पूजन (वेदश्री तपोवन)

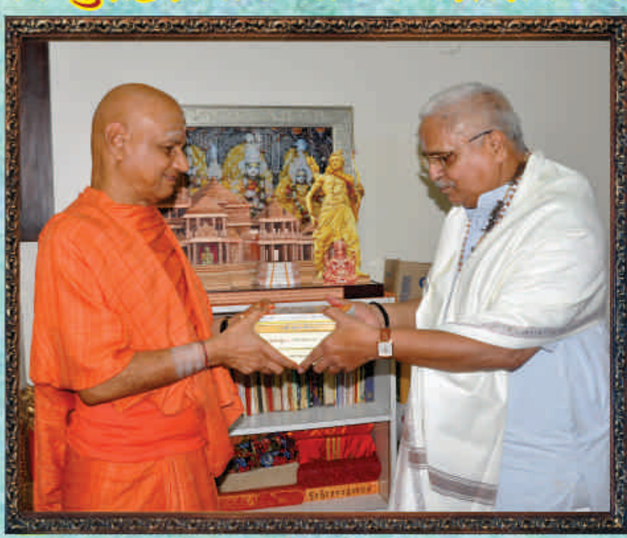

श्रीमान भैय्याजी जोशी का सम्मान

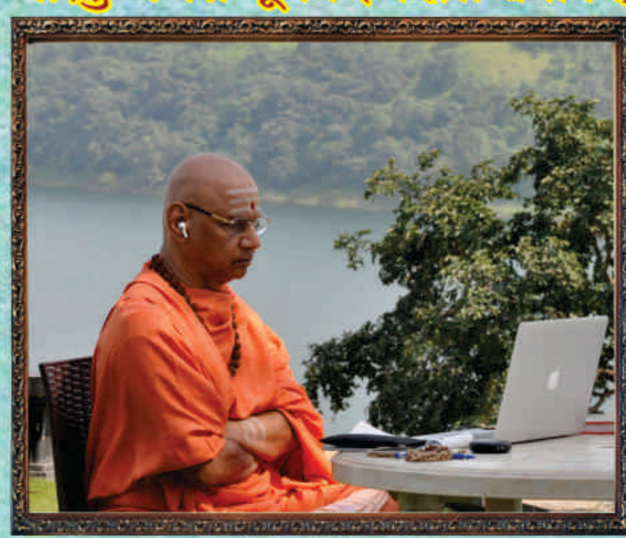

वर्क फ्रॉम होम

॥ धर्मश्री ॥

परम पूज्य आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज के उपदेशों एवं प्रवचनों पर आधारित

धर्मश्री

भारतमाता मंदिर (हरिद्वार) की सेवा में समर्पित

धर्मश्री प्रकाशन, मानसर अपार्टमेंट्स, सूर्यमुखी दत्तमंदिर के समीप,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे - ४११ ०१६ दूरभाष : (०२०) २५६५२५८९, २५६७२०६९
ईमेल : dharmashree123@gmail.com वेबसाइट: www.dharmashree.org

वर्ष २० अंक २ युगाब्द ५१२३ त्रैमास : अप्रैल से जून २०२१

संपादक :
डॉ. प्रकाश सोमण
सह-संपादक :
श्री. भालचन्द्र व्यास
संपादक मंडल :
श्री शांतनु रिठे
श्री गिरीश डागा
श्री प्रणव पटवारी
मार्गदर्शक :
प्रा. दत्तात्रय दि. काळे,
डॉ. संजय मालपाणी
सहयोगी :
श्री. हनुमान सारस्वत
श्री. सकाहरि पवार
व्यवस्थापक :
श्री. श्रीवल्लभ व्यास,
श्री. अनिल दातार,
श्री. दत्ता खामकर
डी.टी.पी., मुखपृष्ठ :
जैनको कम्प्यूटर्स, अजमेर
सौ. अंजली गोसावी,
मुद्रक : **श्री. संजय भंडारे, पुणे**
स्वानंद प्रिंटर्स,
डेक्कन जिमखाना, पुणे – ४११००४
मो. नं.: ९८२३०१४८६२
ई-मेल:svbhandare21@gmail.com

सूचना
पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे पत्रिका या संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
– संपादक

अनुक्रम

५. श्रीराम नाम महिमा
१०. समर्थ रामदासस्वामी रचित – पावनभिक्षा
१४. शिवाजी न होत तो .....
१९. सद्गुणों की साधना
२२. जन-जन का सपना राम मंदिर अपना
२९. पतंजलि शौर्य संस्कार शिविर
३०. गीता परिवार स्तोत्रसंथा-वर्ग वृत्त
३२. विश्वविक्रमी ई-संस्कारवाटिका
३६. वेदविद्यालय गतिविधि
३७. कोव्हिड टीकाकरण सत्य और मिथ्य
३९. आगामी कार्यक्रम
४०. श्रद्धांजलि
४२. दानदाता सूची

कृपया ध्यान दें

'धर्मश्री' का ई-संस्करण प्राप्त करने हेतु निम्न सूचना
मोबाइल नं. 9423005027 पर तुरन्त देवें।
प्रार्थी का नाम, पता, शहर का नाम, राज्य का नाम
Whatsapp मोबाईल नं...........................

धर्मश्री के इस अंक के यजमान

श्री. पुरुषोत्तमजी आदित्यजी लोहिया
पुणे
साभिनंदन धन्यवाद!

स्वार्थरहित, निरपेक्ष बुद्धि से किया गया शुद्ध कर्म भगवान की पूजा बन जाता है। –पूज्यपाद

संपादकीय

मन की वैक्सीन

कोरोना लॉकडाउन, पहली लहर, दूसरी लहर, तीसरी लहर... पिछले लगभग एक साल से बस येही शब्द सुनाई दे रहे हैं। पुराणों के रक्तबीज राक्षस की तरह यह कोरोना हर दिन नया रूप लेकर अधिक संदिग्ध और भयंकर बनकर सामने आ रहा है।

हमने भी पिछले कुछ समय में अपने अत्यंत आत्मीय, कार्यानिष्ठ और महत्त्वपूर्ण व्यक्तियोंको खोया है। सारा धर्मश्री परिवार उनको श्रद्धांजलि अर्पित कर उनके परिवार को धैर्य धारण करने हेतु प्रभु से प्रार्थना करता हैं।

इस सारी आपदा में शारीरिक अस्वस्थता के साथ-साथ मानसिक अस्वस्थता भी अधिक आती है। मन पर होनेवाला यह गहरा प्रभाव तुरंत दिखाई नहीं देता, लेकिन भीतर बड़ा कष्ट पहुँचाता है। ऐसे समय परिवार के सभी लोगों को एक साथ समय निकालकर एक-दूसरेसे संवाद करके एक-दूसरेका सहारा बनना होगा। कुछ आसन, प्राणायाम, अच्छी पुस्तकों का वाचन, युक्त आहार-विहार इ. रोज करके सदा सकारात्मक रहनेका प्रयास भी करना होगा। बाहर की वैक्सीन जब मिले तब मिलें, लेकिन हमारे मन की वैक्सीन को संभालकर हमें स्वस्थ और सुरक्षित रहना है। अनुसंधानकर्ताओं ने कोरोना के लिए वैक्सीन ढूंढ ली है। परंतु अपने अपने मन पर लगनेवाली सकारात्मकता की वैक्सीन हमें ही ढूंढनी होगी। इसलिए रोज थोडा नाम-जप, ध्यान का अभ्यास, गीता का पठन तथा सौम्य व्यायाम उपयुक्त होगा।

इस बार तालाबंदी के कारण सभी क्रियाकलाप बंद रहे और समस्त गतिविधियाँ अवरुद्ध हो गयी। लेकिन उसमें भी अपने प्रतिष्ठान का, गीता परिवारका कार्य आधुनिक साधनोंसे न केवल उत्तम चल रहा है, अपितु इस संकट के अवसर को इष्टापत्ति मानकर अपना गीता परिवार अपने कार्यक्षेत्र में नई उंचाईयाँ छू रहा है। आज लगभग विश्व के ८० देशोंतक गीता परिवार का काम इस कोरोनाकाल में पहुँच चुका है।

स्वामीजी के नेतृत्व में इस वर्ष संपूर्ण भारत में चलाया गया राममंदिर निधिसमर्पण अभियान बड़ा सफल और अभूतपूर्व रहा। इस अभियान से सारा भारत राममय बन गया था। अतः अब राममंदिर का कार्य भी बड़े सुचारु रूप से एवं गति से आगे बढ रहा है।

वास्तव में यह धर्मश्री अंक भी कोरोना की सारी बाधाओं को लांघकर अपने-अपने घरवास में रहकर (वर्क फ्रॉम होम) बनाया गया धर्मश्री का प्रथम अंक है। जय श्रीकृष्ण!

श्रीराम नाम महिमा

प.पू. स्वामी गोविंददेव गिरि

हम भारतीय संस्कृति के सारे उपासक वेदों के अनुगामी हैं हमारी संस्कृति वेदोद्भूत संस्कृति है। वेद हमारा परम धन है और इन सारे वेदों का सार एक महाभारत में प्राप्त होता है और इसलिए महाभारत को पंचम वेद कहा गया।

'भारतं पंचमो वेदः' इस प्रकार उसकी महत्ता गायी गयी है। अब इस संपूर्ण महाभारत के एक लाख से अधिक श्लोकों में से सार निकालते हुए हमारी परंपरा ने पाँच रत्नों को चुना और उन पाँच रत्नों में एक रत्न हैं – **'विष्णुसहस्रनाम।'**

सहस्रनामतुल्य नाम–

महाभारत के भीष्मपर्व में, शांतिपर्व में और अनुशासन पर्व में राजर्षि भीष्म का उपदेश हम लोगों को सुनने मिलता है। उसमें स्वयं महाराज युधिष्ठिर ने जो प्रश्न पूछे हैं, उन प्रश्नों में उन्होंने एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछा–

को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमोमतः।
किं जपन्मुच्यतेजन्तुर्जन्मसंसार बन्धनात् ।।

प्रश्न का स्वरूप ध्यान में लीजिये। मनुष्य का सर्वोच्च कर्तव्य क्या है? और उसका उत्तर देते समय जो पहली बात राजर्षि भीष्म ने बतायी–

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः।।

उन्होंने विष्णुसहस्रनाम की भूमिका बाँधते हुए यह बताया कि इस विष्णुसहस्रनाम का पाठ करते रहना, इसका पारायण करते रहना, इसके आवर्तन करना, यह मनुष्य के उद्धार के लिए अत्यंत उपयोगी बात है। वहाँ सर्वाधिक महत्त्व उन्होंने विष्णुसहस्रनाम को दिया और इस विष्णुसहस्रनाम को आदि- शंकराचार्य महाराज भी अपनी पावन वाणी से गाते रहे हैं।

गेयं गीता नामसहस्रं ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम् ।
नेयं सज्जनसंगे चित्तम् देयं दीनजनाय च वित्तं ।।

भज गोविंदं ....

इसमें उन्होंने भगवद्गीता और विष्णुसहस्रनाम का पाठ स्वाध्याय के रूप में सबके लिए बताया।

लेकिन सारा सहस्रनाम यदि कोई नहीं पढ सकता है तो उसे क्या करना चाहिए? सहस्रनाम संस्कृत भाषा में है। सहस्रनाम पढने में अधिक समय भी लग सकता है। जो पढ़ सकते हैं उनको तो पढ़ना ही चाहिए लेकिन बडी विशेष बात सामान्य से सामान्य साधक के लिए हमारे ऋषियों ने बतायी – सहस्रनाम न भी पढ पायें तो आप केवल बस रामजी का नाम लीजिये–

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनामतत्तुल्यं राम नाम वरानने ।।

सुप्रसिद्ध रामरक्षा–स्तोत्र में साक्षात भगवान शिवजी की वाणी बुधकौशिक ऋषि ने हम लोगों को बतायी और वे कहते हैं कि '**सहस्रनामतत्तुल्यं रामनाम वरानने।**' भगवान श्रीराम का नाम सहस्रनाम के तुल्य है और इसलिए रामनाम का जप जब करना आरंभ करते हैं तो सहस्रनाम के पाठ का सारा का सारा फल आपको प्राप्त हो जाता है।

अनुकल्प नाम :–

यदि मैं शास्त्र की दृष्टि में देखूँ तो '**ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म**' ऐसा जिस ॐकार का वर्णन भगवद्गीता ने किया .... '**ॐ इत्येतत्**' ऐसा कठोपनिषद में इसके बारे में कहते हैं। '**तस्य वाचक: प्रणव:**' ऐसा भगवान पतंजलि जिस ॐकार के बारे में कहते हैं, उस ॐ की मात्राएँ और राम की मात्राएँ समान हैं।

लेकिन हमारे संत एक बात और कहते हैं जो अधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रत्यगात्मानंद महाराज ने जपसूत्र गाथा में एक सुंदर बात बतायी – ॐकार की प्रतिष्ठा तो अपने स्थानपर है ही; लेकिन राम उसका अनुकल्प है। यह 'अनुकल्प' शब्द बडा महत्त्वपूर्ण है। जब एक अत्यंत दाहक वस्तु हम ग्रहण नहीं कर सकते हैं तो उसको सुपाच्य कैसे बनाया जाए उसे अनुकल्प कहते हैं। जैसे आजकल मैं अनेक लोगों को दवा के रूप में गोमूत्र अर्क लेने के लिए कहता हूँ। गोमूत्र का अर्क बडी अद्‌भुत दवा है लेकिन गोमूत्र का अर्क बडा तीखा भी होता है, इसलिए वह ले नहीं सकते हैं फिर हम उन्हें कहते हैं कि आधा गोमूत्र का अर्क लो उसमें थोडा पानी भी डालो फिर लो। फिर वह सुपाच्य हो गया, ग्राह्य हो गया।

ॐकार साक्षात परब्रह्म का वाचक है। इसलिए ॐकार के जप का अधिकार हमारी परंपरा में केवल संन्यासियों को दिया गया। सरल नाम भगवान राम का है। समर्थ रामदास स्वामी वर्णन करते हैं – '**बहु साजिरे स्वल्प सोपे फुकाचे।**' रामनाम जितना सरल कोई नाम नहीं, छोटा भी अन्य कोई नाम नहीं और बता दूँ! प्रभावी भी अन्य कोई नाम नहीं।

'**हेतु कृशानु भानु हिमकर है।**' गोस्वामी जी ने रामनाम की महिमा बतलाते हुए कहा कि इस रामनाम में तीन बीज हैं। अग्नि का 'र' है, सूर्य का बीज 'अ' है और चंद्रमा का बीज 'म' है। इन तीनों बीजों का उसमें सम्मीलन है। इसलिए रामनाम हमारे सारे पातकों को जलाकर, उनका विनाश करके अत्यंत शीतलता हमें प्रदान कर देता है।

पापनाशक नाम :–

यह बात मैं इसलिए कहता हूँ कि अनेक बार नामजप करनेवाले लोगों के लिए व्यवधान निर्माण करनेवाले हमारे शिक्षित लोग कहा करते हैं कि इनका मन तो लगता नहीं है, मन तो एकाग्र होता नहीं है फिर मुख से राम–राम नारायण–नारायण करके इनको क्या मिलनेवाला है?

ऐसा कहनेवालों की बातों में कृपा करके मत आइये। वे झूठ बोल रहे हैं। भगवान के नाम में वह शक्ति है। आप श्रद्धा रखकर उच्चारण करते हैं, बडी अच्छी बात है। आपकी श्रद्धा नहीं है फिर भी आप उच्चारण करते हैं, तब भी वह नाम आपका उद्धार किये बिना नहीं रहेगा यह श्रुति का सिद्धान्त ध्यान में रखना। इतना ही नहीं मित्रों, हमारी बाहर की अवस्था

शुचिर्भूत है कि नहीं, यह बात तो है। लेकिन हम जिस नाम को ले रहे हैं वह शुद्ध रूप में ले रहे हैं कि नहीं इसका भी विचार करने की बात यहाँ नहीं। गोस्वामी तुलसीदासजी ने बडी सुंदर बात कही, **'उलटो सुलटो ऊगि है, खेत पूरे जो बीज।'**

जिस प्रकार खेतो में गिरा हुआ अनाज का दाना, चाहे उल्टा है चाहे सीधा है लेकिन फसल तो उपर ही आनेवाली है उसी प्रकार आपके द्वारा लिया गया भगवन्नाम शुद्ध है अथवा अशुद्ध है इसका विचार करने की आवश्यकता नहीं आपको तो पुण्य ही मिलनेवाला है इसका विश्वास रखिए। बहकाने वालों के पीछे मत जाइए। आपको आज जितना ज्ञान है उसी को संबल बनाकर भगवान के नाम का जप आरंभ कीजिए। आगे आपको कहा, पहुँचाना है इसकी जिम्मेदारी जिसका नाम आप ले रहे हैं, उस भगवान की हो जाती है ऐसा विश्वास रखिए। यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण बात है। स्वयं महर्षि वाल्मीकिजी कहाँ राम का नाम ले सकते थे। अध्यात्म रामायण में उन्होंने स्वयं अपनी आपबीती बतायी। उन्हें नारदजी ने रामनाम लेने के लिए कहा। लेकिन डकैती का काम करनेवाला वह रत्नाकर नाम का दस्यु रामनाम का उच्चारण नहीं कर पा रहा था। समर्थ गुरु हैं देवर्षि नारद! उन्होंने कहा– **'मरेऽति जप सर्वदा।'** मरा-मरा कहो और मरा-मरा करते-करते राम-राम हो गया और **'वाल्मीकि भर ब्रह्म समाना।'** यह नाम का चमत्कार है। रामनाम चिंतामणि है।

तारक नाम :–

'ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं' गोस्वामीजी ने कितना सुंदर उसका वर्णन किया। ब्रह्म का अर्थ है 'वेद' संपूर्ण वेदवाङ्मय का सार एक रामनाम में आया ऐसा हमारे समस्त संतों ने खुलकर कहा।

एक सुंदर घटना हमारे पुराणों में आती है– एक बार देवताओं में, दानवों में और मानवों में झगडा हो गया। सबने सुना– **'चरितं रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरम्।'** भगवान श्रीराम का चरित्र शतकोटि प्रविस्तर है, तो देवताओं ने दानवों ने और मानवों ने सोचा कि अपने हिस्से को बँटवारा कर लेना चाहिए। अब यह बँटवारा करे कौन? बँटवारा करने के लिए वे सब शिवजी के पास गये। शिवजीने सारे शतकोटी नामोंका दोनों में बटवारा कर दिया। फिर भी आखीर दो अक्षर रह गये। शिवजी ने कहा, इतने बडे बँटवारे का काम मैंने किया तो कुछ कमीशन मेरा होना चाहिए। अब ये दो अक्षर मैं ले लेता हूँ। वे दो अक्षर थे 'रामनाम'! भगवान शिव ने सब बाँट दिया और 'रामनाम' स्वयं ग्रहण कर लिया। **'श्रीमत्शंभुमुखेन्दु सुंदर वरे संशोभितं सर्वदा।'**

उस रामनाम का जप करते रहे भगवान, जो आदियोगी हैं। आश्चर्य की बात यह है, काशी में विश्वनाथ भगवान जो भी व्यक्ति वहाँपर अपना प्राण छोड़ता है उसके दाहिने कान में उसे रामनाम का उपदेश करते हैं।

रामनाम ही तारक ब्रह्म कहलाता है। आपको क्या लगता है कि ये सारी काल्पनिक बातें हैं? ठाकुर रामकृष्णदेव परमहंस एक ही बार काशी गये थे और जब वे नौका से चले तब मणिकर्णिका घाट आते ही उठ खडे हो गये। और भावसमाधि में चले गये। भावसमाधि उतरने के पश्चात लोगों ने हाथ जोडकर पूछा तो उन्होंने कहा– 'मैंने एक व्यक्ति के कान में रामनाम का उपदेश करते हुए भगवान महादेव को देखा।' ठाकुर रामकृष्ण परमहंस ने साक्षात भगवान को एक व्यक्ति के कान में रामनाम का उपदेश करते हुए देखा। आप इसका अविश्वास करेंगे। यह दो अक्षर जो भगवान ने चुने यह सामान्य अक्षर नहीं हैं।

जब हम रामनाम का उच्चारण करते हैं तब हमारे सामने दशरथनंदन श्रीराम का सुंदर विग्रह आता

है, बहुत अच्छी बात। भगवान श्रीराम के सगुण साकार स्वरूप में हमारा प्रेम हो जाय बहुत अच्छी बात। रामनाम की विलक्षणता यह है कि भगवान को दशरथनंदन न माननेवाले, उनको सगुण साकार रूप न माननेवाले भी अत्यंत बडे–बडे योगियों ने राम का नाम लिया। कबीरदासजी महाराज, दशरथनंदन श्रीराम का नाम नहीं लेते हैं, साधुसंप्रदाय अथवा अनेक निर्गुणी संप्रदायों में दशरथनंदन श्रीराम ऐसा नहीं माना जाता।

वहाँ भगवान का स्वरूप निर्गुण है – 'आत्माराम' हमारी आत्मा का ही नाम है राम। '**सोऽयमात्माचतुष्पाद**' माण्डूक्य उपनिषद ने कहा– ॐकार आत्मतत्त्व है उसी प्रकार राम भी आत्मतत्त्व है। '**रमन्ते योगिनो यस्मिन**' जिसमें बड़े बड़े योगी रम जाते हैं **नित्यानंदे चिदात्मनि –** जिस आत्मतत्त्व में योगी लोग रमण करते हैं उस आत्मतत्त्व का नाम 'राम' है। अब उसकी अनुभूति प्राप्त करनी है तब तो निर्गुण और सगुण इन दोनों के बीच में चलनेवाला यह नाम हमारे लिए सर्वोत्तम आलंबन हो सकता है। रामनाम दोनों का आलंबन है। गोस्वामीजी तो रामनाम की महिमा कहते हुए एक अद्भुत बात बताते हैं – भीतर और बाहर दोनों ओर प्रकाश निर्माण करनेवाला अद्भुत दीपक है यह रामनाम।

'रामनाम मनि दीप धरू जीह दे हरिद्वार।'
तुलसी भीतर बाहेरहुँ जो चाहसि उजियार।।

जिस प्रकार रामनाम निर्गुण पंथियों के लिए उपयोगी है और सगुण भक्तों के लिए भी उपयोगी है उसी प्रकार जिसे बाहर की समृद्धि चाहिए उसके लिए भी और जिसे आत्मशांति चाहिए उसके लिए भी उपयोगी है। इसलिए वे कहते हैं– यह हमारी जिह्वा बहिर्जगत और अन्तर्जगत दोनों के बीच की देहली है। यदि घर में एक ही दीपक है तो संस्कृत शास्त्र में आता है '**देहली दीपन्याय**' जिसका अर्थ है कि अंधेरा हो गया है और दीपक एक ही है तो उसको देहली पर रख दिया जाए तो भीतर भी प्रकाश मिलता है और बाहर भी प्रकाश मिलता है। उसी प्रकार रामनाम के रत्नदीप को यदि जिह्वा के उपर रख लिया गया तो बाहर भी प्रकाश और भीतर भी प्रकाश होगा। बाहर का प्रकाश समृद्धि का और भीतर का प्रकाश शांति का।

मित्रों एक और बात की ओर ध्यान देना चाहिए। अगर आपको अनुभूति के द्वार खोलना है तो नियमित अनुशासन से आसनपर बैठकर 'राम' कहिए। फिर उसके दीर्घ उच्चारण का अद्भुत परिणाम आप देखेंगे। हम लोगों ने शिविरों में इसको करके देखा है। व्यक्तिगत रूप में आपको नि:संकोच एक बात बताता हूँ कि इस प्रदीर्घ रामनाम के उच्चारण से डीप कोमा में गये हुए दो पेशंट्स बाहर आ गये। लेकिन यह बात गौण है।

मुझे जो प्रमुख बात कहनी है वह यह कि **हेतु कृशानु भानु** यहाँपर जो तीन बातें कहीं गयी... अग्नि, सूर्य, चंद्र, इनमें जिह्वा की देवता अग्नि है, नेत्रों की देवता सूर्य है और मन की देवता चंद्रमा है। तो हमारी जिह्वा राम का जप करती रहें, हमारे नेत्र भगवान के सगुण साकार विग्रह को निहारते रहें और हमारा मन प्रेम से ओतप्रोत हो जाए, इस प्रकार नियमित रूप से कुछ समयतक भगवान का जप करके देखियेगा आपको समाधि लगाने की आवश्यकता नहीं होगी।

हमारे ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं– समाधि आपको ढूँढते स्वयं पहुँच जाएगी। आप कहाँ उसके पीछे दौडते हैं? आप अपनी जिह्वा को रामनाम को समर्पित कीजिए आप अपने नेत्रों को श्रीराम के सुंदर स्वरूप की ओर समर्पित कर दीजिए।

ज्ञानेश्वर महाराज के शब्द हैं –

समाधि घर पुसे मानसाचे

समाधि आपको ढूँढते हुए आयेगी। आरंभ में अवश्य कुछ नियम के अनुसार करना पडेगा बाद में जब

आपका मन उसमें उडेला जाएगा, जब अंत:करण रामप्रेम से भर जाएगा तब अपनेआप वह दिव्यता जीवन में साकार होगी।

आप लोग जानते हैं - हमारी वाणी के ४ भाग हैं। वैखरी-मध्यमा-पश्यन्ती-परा तक पहुँचकर जब नाम उस परा में डूबकर पुन: जो शब्दरूप होकर बाहर आते हैं तब वे शब्द मंत्रमय हो जाते हैं। वे शब्द सिद्धों के शब्द हो जाते हैं।

कविता लिखनेवाला आज का कोरा साहित्यिक एक अलग बात है और हमारे गोस्वामीजी, रामदास स्वामी, ज्ञानेश्वर महाराज जब लिखते हैं, वह सारी मंत्रमयी वाणी है। वह सबकुछ बदल सकती है। हमारे सारे सिद्धों की वाणी इस प्रकार की थी। और यह जितना सरलता से रामनाम से होता है, उतनी सरलता से अन्य उपायों से होना कठिन लगता है। जिसको हो जाए, अच्छा ही है। लेकिन-

बहु साजिरे स्वल्प सोपे फुकाचे।
अती साजिरे स्वल्प सोपे फुकाचे।।
करी मूळ निर्मूळ घेता भवाचे।
जिवा मानवा हेंचि कैवल्य साचे।।

सबसे सरल रामनाम है इसलिए सर्वाधिक प्रभाव, सर्वाधिक सरलता, सबसे लघुतम ऐसा यह दिव्यमंत्र 'राम' अपनेआप में भगवन्नाम भी है और मंत्र भी है। कोई बहुत बडे मंत्रों की आवश्यकता नहीं है। राम यह नाम ही परिपूर्ण है। **'आत्मा वा अरे श्रोतव्य: आत्मा वा अरे द्रष्टव्य:' - श्रोतव्यो-मन्तव्यो-निदिध्यासितव्यो** कहा है न। उसका निदिध्यासन कैसे करेंगे? निदिध्यासन का सर्वोच्च आलंबन है यह रामनाम। क्योंकि राम आत्माराम है। बस, उसके साथ प्रेम हो जाए, उसके लिए समय दिया जाए, उसके लिए आदर आ जाए।

भगवान पतंजलि ने कितने सुंदर शब्दों में कहा- **'स तु दीर्घकाल नैरन्तर्य सत्कारासेवितोदृढभूमि:।'** दो-चार दिन करने से नहीं होगा कुछ दीर्घकाल करना पडेगा। रोज और श्रद्धा के साथ करना पडेगा। बिना श्रद्धा से लिया हुआ रामनाम भी पापनाश करता है, लेकिन मैं बात करता हूँ अनुभूति की। अनुभूति आनी है तो निश्चितरूप से समय से नियमित और श्रद्धा, प्रेम के साथ करना पडेगा।

भारत के ही नहीं विश्व के सारे संतों ने नाम का आश्रय लिया, जप का आश्रय लिया। क्योंकि वाणी हमारे अधीन है। उसे बाहर के उपचारों की आवश्यकता नहीं, रामनाम सरल है फिर भी यदि हमसे साधन नहीं होता होगा तो, यह हमारा दुर्दैव है।

'एतद् आलम्बनं श्रेष्ठम् एतद् आलम्बनं परम्।'

ऐसा श्रुति ने ॐकार के लिए कहा? वही बात रामनाम के लिए है। ॐकार कठिन है? रामनाम सरल है। गिरनेवाले बर्फ के ओले भी H_2O ही होते हैं और पानी भी H_2O ही होता है। दोनों का तत्त्व एक होनेपर भी दोनों का रूप अलग है। ॐकार निर्गुणप्रधान है, राम सगुण निर्गुण दोनों को लेकर चलनेवाला है इसलिए उसका स्वाद अलग है। छोटे बच्चों को जल में खेलना जितना अच्छा लगता है उससे ज्यादा ओलों के साथ खेलना अच्छा लगता है। पिघला हुआ घी जितना मीठा नहीं लगता उतना जमा हुआ घी जाडे के दिनों में स्वादिष्ट लगता है।

संत एकनाथ महाराज कहते हैं- भगवान का सगुण रूप जमे हुए घी के समान स्वादिष्ट है। उस स्वादिष्ट भगवत-रूप का चिंतन करते हुए जब नाम लिया जाता है तब जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आता है। सारा जीवन बदल जाता है। रामनाम का यह मंगल दीप प्रकट होकर उनका अंतर्बाह्य तमोनाश हो जाए इस प्रकार की शुभकामना सबके लिए वितरित करता हूँ...

- श्रीमती विजयाताई गोडबोले

पावन भिक्षा

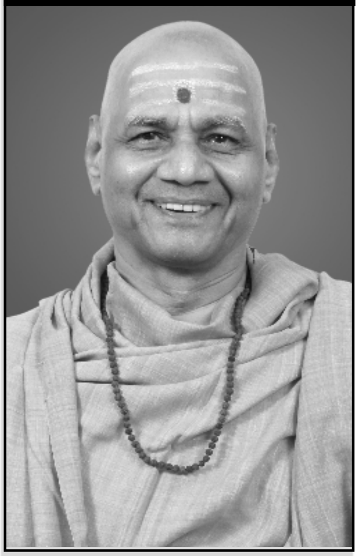

समर्थ रामदास स्वामी रचित पावन भिक्षा

पूज्य स्वामीजी द्वारा कार्यकर्ताओं के लिए समर्थ रामदासजी-रचित ''पावन भिक्षा'' पर आधारित मार्गदर्शन

कार्यकर्ता की दृष्टि से मनुष्य के **तीन शत्रू** (१.अज्ञान २.आलस्य ३.अहंकार), **तीन मित्र** (१.संपर्क २.स्नेह ३.समीक्षा), **तीन प्रतिक्रिया** (१.उपेक्षा २.विरोध ३.सम्मान) इन सभी पहलूओंपर हमने चिंतन किया। लेकिन इन सभी का एकत्रीकरण हमें मिलेगा- समर्थ रामदासजी द्वारा प्रभु श्रीराम को माँगी गयी पावन भिक्षा में...!

इसमें शब्द आया है **'भिक्षा'।** क्या होती है भिक्षा? किसी भी महान उद्देश के हेतू अपना जीवन समर्पित करने के लिए समाज से अल्प मात्रा में अपनी भौतिक आवश्यकताएँ पूर्ण करने का तेजस्वी व्रतभाव इस भिक्षा-व्यवस्था में अनुस्यूत होता है। इसलिए आप देखेंगे, हमारी परंपरा में सारे महापुरुष संन्यासी भिक्षा माँगते हैं। आज सारा संघ का, महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान का कार्य भी इस भिक्षापर ही चलता है। यह भिक्षा तेजस्वी जीवन का रसायन है। लेकिन यहाँ हम भिक्षा माँग रहे हैं सद्‌गुणों की, और वह भी भगवान से माँग रहे हैं, इसलिए इस भिक्षा को पावन भिक्षा कहा गया। माँगते तो हम भगवान से सभी, हैं लेकिन क्या माँगे इसका विवेक होना चाहिए। वह विवेक इस पावन भिक्षा में है।

यह माँग – यह भिक्षा इसलिए पावन है क्योंकि यह समस्त समाज हेतु उपयुक्त है..! इस प्रार्थना में रामजी से सद्‌गुणों का दान माँगा गया हैं। जैसे ज्ञानेश्वर माउली ने विश्वकल्याण हेतु पसायदान के रूप में प्रसादि माँगी, वैसे ही समर्थ रामदास जी प्रभु श्रीराम से सद्गुणों का दान माँगते हैं। यदि हम सभी कार्यकर्ता स्वयं में पहले सद्‌गुणों का जागरण और विकसन करें, तो अपनेआप समाज में और अपने कार्यक्षेत्र में हम प्रिय एवं सफल हो जायेंगे। किसी भी कार्यकर्ता को अपने कार्य को आगे ले जाने के लिए किसी विशेष गुणों की आवश्यकता होती है। किसी के पास कुछ उपलब्ध होगा- तो ही वह औरों को कुछ दे पायेगा ना! इसलिए हमें भी प्रभु से यह पावन भिक्षा माँग लेनी चाहिए..!

निर्मल करणी दे दो राम... ... ..

हमें हमेशा अपनी आत्मसमीक्षा करते हुए अपने आत्मानुशासन की ओर बढ़ते समय यह देखना होगा कि हमारी 'वाणी' तो मीठी है किन्तु हमारा 'व्यवहार' कैसा है... माधुर्य का परिणाम अत्यंत प्रभावशाली होता

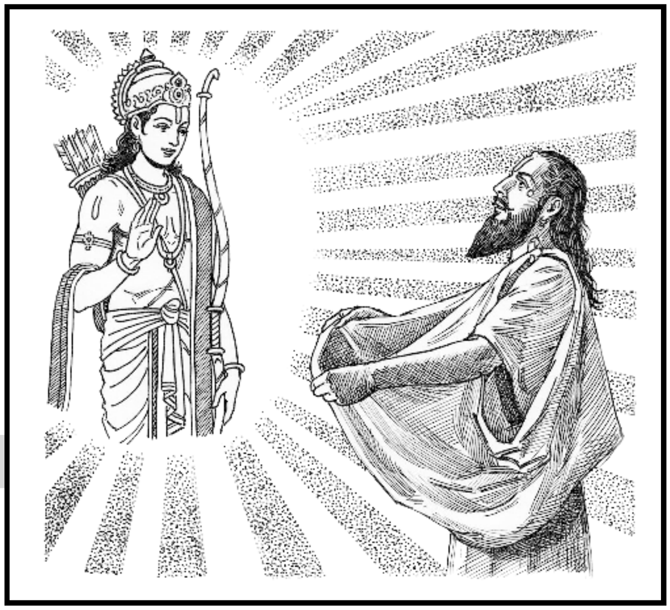

है। परन्तु परिवार, समाज, कर्मक्षेत्र, सृष्टि के साथ हमार व्यवहार यदि ठीक एवं मधुर नहीं है तो केवल मीठी बात करनेवाले व्यक्ति से आरंभ में लोग प्रभावित होंगे किन्तु वर्तन यदि ठीक नहीं है, तो पश्चात निंदा और नाराजगी सहन करनी पड़ेगी। लोग आपसे दूर होते जायेंगे। इसलिए वचनबद्धता, समयपालन, अभ्यासात्मक प्रकटन इत्यादि गुणमूल्यों के साथ विनम्रता से आत्मविश्वासपूर्वक व्यवहार रखना आवश्यक है।

प्रासंगिक मति दे दो राम....

कार्य को बढाते समय हमारे सामने बहुत बार बड़ी दुविधा उत्पन्न करनेवाले निर्णय लेने के प्रसंग आ सकते हैं। ऐसे समय जब प्रसंग सामने हो उसका महत्त्व एवं आवश्यकता जानकर सामाजिक, राष्ट्रीय एवं सार्वजनिक समग्र हित को प्रधानता देकर हमारा व्यवहार उसके अनुकूल हो.. इस प्रकार हमारी बुद्धि विचक्षण होनी चाहिए..

चतुराई भी दे दो राम....

बुद्धि विचक्षण होने से हमारे सम्पर्क में आनेवाले प्रत्येक व्यक्ति का हेतु हम ठीक से समझ पाते हैं। जीवन में सामनेवाले की मनीषा जानकर हमेशा सावधान रहना आना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति किस कारणवश हमसे जुड़ना चाहता है अथवा क्यों सहयोग दे रही है इसका मर्म समझते हुए अपने कार्य को चौकन्ना रखकर सावधानी से आगे बढ़ाना चाहिए।

इंगितज्ञता दे दो राम...

इंगित अर्थात् मन का भाव। इस गुण का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है– हनुमानजी..! वे विलक्षण इंगितज्ञ थे। व्यक्ति को देखकर तुरंत भाँप लेते थे कि उन्हें किसी व्यक्ति के कितना समीप जाना चाहिए अथवा उसे अपने निकट कितना आने देना चाहिए, किस व्यक्ति का क्या कौशल्य है तथा उसका उपयोग कहाँपर कैसे करना है। इसलिए तो प्रभु रामचन्द्र जी को पहली बार दूर से देखकर भी उन्होंने जान लिया था कि रामजी एक निर्मल व्यक्तित्व हैं। यही गुण रामजी के पास भी था। इसलिए उन्होंने भी हनुमानजी की प्रथम भेंट में ही लक्ष्मण जी से कहा था, ''**लक्ष्मण, यह हनुमान मुझे मिल जाय तो कितना अच्छा होगा**'' क्योंकि तब वे सुग्रीव के सचिव थे।

बिभीषण जी ने भी जब लंका से सीधे रामजी के शरण में आना चाहा तब रामजी ने तत्काल एक बैठक बुलायी। नल, नील, जांबुवान इत्यादि सभी ने विभिन्न मत प्रकट किये। परन्तु हनुमानजी के शब्दप्रयोग वहाँ एकदम समर्पक तथा अचूक थे। उन्होंने शरणागत की देहबोली, पूर्वव्यवहार व चरित्र आदि समग्र वर्णन करते हुए बिभीषण जी के सात्त्विक सुलक्षणी व्यक्तित्व का सटीक वर्णन किया और उन्हें रामजी के दल में सम्मिलित करने से क्या फायदे–नुकसान हो सकते हैं, यह भी सुस्पष्ट किया। इसमें हनुमानजी की सावधानता, पूर्वाभ्यास और चतुराई का दर्शन होता है। लोगों के अंत:करण को भाँपने की कला और यही धूर्त एवं

इंगितज्ञ स्वभाव प्रत्येक कार्यकर्ता के भीतर जागृत व विकसित होना चाहिए।

बहुजन मैत्री दे दो राम....

स्वयं के भीतर इंगितज्ञता निर्माण हो, इसलिए हमें चाहिए कि लोगों को जानने-परखने का भरपूर अभ्यास हम करें। इसलिए सभी प्रकार के लोगों के साथ हमें मित्रता करनी चाहिए, तभी हम इस गुण का विकास अपने भीतर अधिक अच्छे से कर पायेंगे।

प्रत्येक व्यक्ति का स्वभाव भिन्न-भिन्न होता है। सभी के भीतर विभिन्न गुणों का अंतर्भाव होता है। सबको साथ जोड़कर उनके गुणों का उपयोग हितकारक कर्म के लिए अवश्य करना चाहिए। कुछ लोगों में अवगुण अधिक मात्रा में होते हैं, किन्तु एकाध गुण निश्चित ही ऐसा होता है, जो उन्हें अन्यों से श्रेष्ठ बनाता है। उसी गुण को केंद्रित करते हुए अपने सत्कार्य को आगे बढाना चाहिए। तभी कार्य का विस्तार होगा।

अधिक से अधिक समाज तक संस्कार प्रक्रिया पहुँच पायेगी। साथ ही बहुजनों से मैत्री के कारण उनके गुणों का संक्रमण अपनेआप अपने भीतर भी होगा। हम भी स्वयं के व्यक्तिमत्त्व को अधिकाधिक विकसित कर पायेंगे। बस, ध्यान इतना रखना है कि हम अन्यों के गुणों को ही अपनाये, अवगुणों को दुर्लक्षित करें..! बहुजन-मैत्री से अपने जीवन की कृतार्थता बढ़ानी चाहिए।

विद्यावैभव दे दो राम.....

जीवन की कृतार्थता तथा सफलता के लिए हमे स्वयंशिक्षा एवं आत्मसंस्कार की आदत स्वयं को लगा लेनी चाहिए। भगवान श्रीकृष्ण भगवद्गीता में कहते हैं, **उद्धरेत् आत्मनात्मानम्। –** स्वयं की उन्नति स्वयं ही करनी चाहिए। महात्मा बुद्ध ने भी यही संदेश दिया- **आत्मदीपो भव!**

बिना अधिक पढ़कर अथवा अधिक ज्ञान संपादित न करके भी आप अन्यों को पढ़ा-सीखा सकते हो, परन्तु उसमें अधुरापन रहेगा। इसलिए जितना पता है, जाना है उसे प्राथमिक स्तरपर सिखाना-पढ़ाना आरंभ करें; अपितु साथ में जिज्ञासू अभ्यासक बनकर सभ्यता- संस्कृति- संस्कार का ज्ञान प्राप्त करते हुए आत्मज्ञान की साधना शुरू रखनी चाहिए। तभी व्यक्तिमत्त्व में और कार्य में निखार आयेगा!

उदासीनता दे दो राम.....

यहाँ उदासीनता माने 'वैराग्य'। कार्य करते समय हमेशा हमारे सामने अनेकों प्रकार के प्रलोभन प्रापंचिक दुविधाएँ सामने आती हैं, जो हमे कार्य से और कार्यहेतु से दूर कर सकती हैं। ऐसे समय लगन से दृढता से अपने नित्याभ्यास के साथ निरंतर कार्यरत रहने से आपमें अपने कार्य से मिलनेवाली उपेक्षा – विरोध – सम्मान इन तीनों के प्रति अपनेआप अलिप्तता का भाव आने लगेगा। चाहे जो कुछ हो, मेरा काम रुकेगा नहीं। यदि कभी स्वल्पविराम भी लेने की आवश्यकता उपस्थित हुई, तो भी आगे फिरसे निष्ठापूर्वक श्रद्धायुक्त भाव से स्वीकृत कार्य को जारी रखना चाहिए। क्योंकि संस्कारकार्य यही हमारी भगवद्पूजा एवं भगवत् सेवा है।

खड़ा हिमालय बता रहा है,
डरो न आँधी पानी में ।
खड़े रहो तुम अविचल होकर,
सब संकट तूफानी में ।।

अनेक प्रकार के संकट आयेंगे। अनेक विपदा आयेगी। किन्तु हनुमानजी की तरह ड़टे रहना। समुद्रलंघन के समय सुरसा, सिंहिका.. कितनी सारी बाधाएँ आयी, परन्तु चतुराई और पराक्रम से सबको परास्त करते हुए हनुमानजी अपने गंतव्य तक पहुँच ही गये। इस प्रकार आनेवाले संकटों को अप्रभावी सिद्ध करते रहना चाहिए। यह आत्मविश्वास तभी उत्पन्न होगा, जब हम 'विद्या' और 'उदासीनता'- (भगवान श्रीकृष्ण तथा योगर्षि पतंजलि की भाषा में 'अभ्यास' एवं 'वैराग्य') प्राप्त कर पायेंगे।

मैं ना जानु वह दे दो राम.....

स्वयं अनुशासित होकर जब हम आत्मश्रद्धा तथा दृढ निश्चय से कार्यतत्पर हो जायेंगे, तब रामजी से

विनम्र भाव से निवेदन करना चाहिए कि 'हे नाथ, जो हमने अब तक नहीं माँगा, परन्तु हमारे द्वारा सभी के लिए कल्याणकारी ऐसी एवं हमारे इप्सित कार्य को आगे बढ़ाने के लिए कोई भिक्षा माँगना यदि रह गयी हो तो, हे राम, वह भी हमें दे दो..!

प्यार तुम्हारा दे दो.....

साथ में भगवान से भक्ति की भिक्षा अवश्य माँगनी चाहिए। हमारे सर्वश्रेष्ठ संतों ने अंतिम बात भगवान से यही माँगी। हमारे देश में इन संतों की विशेषता यह रही है कि उन्होंने भक्ति का आलंबन लेकर शास्त्र और समाज इनमें सेतुबंधन का काम किया है। प्रभु रामचंद्रजी का काम भी जीवनभर सेतुबंधन का ही रहा है। आज अगर विशाल शाश्वत मानवी हृदयों का सेतु बनाना हो तो इस भक्ति का ही आलंबन सर्वश्रेष्ठ है। मेरी प्रीति आपके प्रति, आपके चरित्र के प्रति निरंतर बढ़ जाये। इसलिए हर रोज रामजी के केवल इतना माँगना बस्स.. इतना तो दे ही दो, भगवान...!

तुम्हारे प्रति मेरी रति ।।
मेरी प्रीति तुम्हारे प्रति बढ़ जाये..
बस्स..इतना तो दे ही दो, भगवान..!

हेचि दान देगा देवा..
तुझा विसर न व्हावा।।
हे नाथ मैं तुझे भूलूँ नहीं..!

संगीत गायन दे दो राम.....

भगवान के भक्ति का अत्यंत महत्त्वपूर्ण साधन है, संगीत..! किसी भी विषय में ध्यान नहीं लगता, तो भगवान का गायन करना चाहिए। गान में मन अपनेआप तल्लीन हो जाता है। क्योंकि गायन से भाव की जागृति होती है। हमारे परंपरा में 'सर्वश्रेष्ठ प्रचारक– 'विस्तारक' का पद 'नारदमुनि' को दिया गया है क्योंकि वे एक उत्तम गायक थे। सर्वाधिक 'जनरल नॉलेज' वे रखते थे। वे बुद्धिमान थे, इंगितज्ञ थे और धूर्त भी.. परन्तु वे उत्तम गायक थे, यह उनका अॅडेड व्हॅल्यू था..! हमें भगवान से यह अॅडिशनल व्हॅल्यू अत्यंत विनम्रता से हृदयपूर्वक माँग लेना चाहिए..!

सज्जन–संगति दे दो राम...

कार्य की निष्ठा सदैव जागृत रखने के लिए हमें प्रायः सक्रिय, सात्त्विक, अभ्यासू तथा विचक्षण कार्यकर्ताओं का सान्निध्य प्राप्त होता रहें। हम आपस में विचार व अभ्यास का आदान प्रदान करते रहें। अच्छे ग्रंथ हम पढ़ते रहें और उसमें से उपयुक्त बिंदुओंपर हमारी चर्चा भी होती रहें। अपने भीतर भक्ति का भाव सदैव जागृत रहे, इसलिए प्रायः संतों की संगति में हम अवश्य रहें। यही पावन भिक्षा रामजी से हमेशा माँगी जाये!

ध्यान रखना, जहाँ लौकिक प्रयास रुक जाते हैं वहाँ भगवान की कृपा आरंभ होती है। इसलिए निरन्तर सात्त्विक प्रयास करते रहना चाहिए। सत्कार्य करते–करते, सही दिशा में अविश्रांत लगन से मेहनत करते–करते जब थक जाओगे; तब अपने सद्गुरु के, भगवान के सामने अश्रुपात करें। मन की सच्ची तीव्रता से उन्हें पुकारे। सद्गुणसंचय के लिए यह भी आवश्यक है। इससे आपपर सद्गुणों का वर्षाव होगा।

जो जिस बात की इच्छा उत्कटता से रखता है, अथक एवं अविरल प्रयास करता है उसे वह मिलता ही है। हम जो चाहे वह हमें मिल सकता है, किन्तु बीच में उस आकांक्षा और प्रयास को छोड़ना नहीं चाहिए। इसलिए अचूक प्रयत्न के साथ उसके प्राप्ति हेतु भगवान से निरन्तर माँग करते रहो। सफलता को प्राप्त होना ही होगा...!

इसलिए हमेशा कहते रहो, हे राम पावन भिक्षा हमें दे दो राम, दे दो राम!

– श्रीमती संगीताताई जाधव

शिवाजी न होत तो...

राखी हिंदुवानी हिंदुवान के तिलक राख्यो,
स्मृति और पुराण राख्यो वेदविधि सुनि मैं !
राखी रजपूती रजधानी राखी राजन की,
धरा में धर्म राख्यो राख्यो गुण गुणी में !
भूषन सुकवि जीति हद्द मरहट्टन की,
देस देस करिति बखान तव सुनि मैं !
साहि के सपूत सिवराज समसेर तेरी,
दिल्लीदल दाबिके दिवाल राखि दुनि में !!

कविराज भूषण अपनी इन पंक्तियो में छत्रपति शिवाजी महाराज के कार्य को संक्षेप में एवं यथार्थ रूप में हमारे संमुख प्रस्तुत करते हैं। वे कहते हैं, हे शहाजी महाराज के सुपुत्र शिवराज! आपने हिंदुत्व की तथा हिंदुओं के तिलकों की रक्षा की! आपने हमारे वेद-स्मृति-पुराणों की रक्षा की! आपने हिंदू राजाओं की एवं उनकी राजधानियों की रक्षा की, पृथ्वीपर धर्म की रक्षा की, गुणवानों में स्थित सद्गुणों की रक्षा की! आपने मरहट्टों के बल को संगठितकर अपनी भूमि को स्वतंत्र किया! अन्यान्य प्रांतों में चलनेवाला आपका गुणगान मैंने स्वयं सुना है! और अधिक मैं क्या कहूँ? राजन्, आपकी तलवार ने दिल्ली के तख्त को चुनौती देकर इस भूमिपर बने देवालयों की रक्षा की है!

कविराज भूषण ने अनेकों पद्यों में शिवराय की स्तुति की है। किंतु यह मात्र स्तुति नहीं, यह वस्तुस्थिति है! स्तुति में तो ढेर सारी काल्पनिक किंतु मन को प्रसन्न करनेवाली बातें कही जाती है, जो स्वीकार्य भी है। जो कवि स्तुति से राजा को प्रभावित करना चाहते हैं उनकी बात और है। यहाँ कविराज भूषण स्वयं शिवराज के पराक्रम से प्रभावित होकर उनके संमुख प्रस्तुत हुए हैं! इसलिए यह स्तुति यथार्थ है।

अगर छत्रपति शिवाजी महाराज न होते तो.. इस कल्पना से भी मन थर्रा उठता है! वास्तव में इतिहास में कल्पनाओं के लिए कोई स्थान नहीं होता। किंतु किसी महापुरुष के अभाव की कल्पना से ही उसके प्रभाव का सही-सही मूल्यांकन संभव होता है। इसलिए पहले तो हमें शिवाजी महाराज के अवतरण से पूर्व की परिस्थिति का सिंहावलोकन करना चाहिए।

क्या हो रहा था?

समर्थ रामदास स्वामी के शब्दों में कहा जाए तो, **सकळ पृथ्वी आंदोळली । धर्म गेला ।।** समर्थ रामदास स्वामी स्वयं बारह वर्षों तक पूरे भारत में घूमते रहें। उन्होंने जो चित्र देखा वह भयंकर था। कुछ पाँच सौ वर्षों से यही चल रहा था। कभी कोई तैमूर आता, कभी घोरी, कभी गजनी तो कभी खिलजी। बाबर से लेकर शहाजहाँ तक और औरंगजेब से टीपू सुल्तान तक..! सूची तो बहुत बडी बनेगी। इन सभी आक्रांताओं का उद्देश्य केवल संपत्ति को लूटना या केवल राज करना नहीं था। इनकी कुदृष्टि हमेशा से यहाँ की सनातन परंपरापर रही है। जिसे हम मानते हैं उसे जो नहीं मानता वह जीवित नहीं रह सकता। या तो वह हमारे पंथ में प्रविष्ट हो या फिर जिझिया जैसे अवमानकारक कर चुकाता हुआ जीते जी मृत्यु का अनुभव करता रहें। यही इनकी विचारधारा रही।

कई सौ वर्षों तक इस सहिष्णु धरा ने घोर उत्पीडन का अनुभव किया। किस प्रकार सिक्खों के गुरुओं को चिर कर, जला कर, दीवार मे चुनवा कर मारा तथा स्वयं शिवपुत्र संभाजी महाराज को तडपा-तडपाकर मारा गया, किस प्रकार हमारी माता-भगिनियों को मृत्यु से भी भयंकर यातनाएँ दी गयी, हम पढते हैं तो रोम-रोम से अश्रु एवं अंगार फूट पडते हैं!

हमें इस इतिहास को एवं इतिहास में धर्मनिष्ठा के लिए दी गयी प्राणाहुतियों को नहीं भुलाना चाहिए। दुर्भाग्य से हमारा ध्यान अतीत के इन रक्तलांछित अध्यायों की ओर नहीं जाता क्योंकि वह हमें पढाया ही नहीं जाता हमेशा हमसे एक षड्यंत्र के रूप में छुपाया जाता हैं। इसलिए इन असहिष्णु आक्रांताओं का होनेवाला झूठा महिमामंडन हमें यथार्थ से भटका न पाएं।

सबसे पहले तो हमें छत्रपति शिवाजी महाराज को पहचानना पडेगा। बडी विडंबना यह है कि कई बार हम इन महापुरुषों को समझ नहीं पाते। या फिर यूँ कहा जा सकता है कि हमें जानबूझकर इनके वास्तविक स्वरूप का दर्शन नहीं होने दिया जाता।

रामायण एवं महाभारत के संस्कारों में पले-बढे महाराज का मन हमारी सनातन परंपरा, गौमाता, माता-भगिनी एवं मंदिरों की चल रहीं विटंबना से माँ के गर्भ से ही व्यथित था। जिजामाता ने बचपन से ही उनके भीतर स्वाधीनता की प्रेरणा को प्रज्ज्वलित रखा। इसलिए तो बालक शिवाजी ने भरे दरबार में आदिलशाह के संमुख मस्तक झुकाने से मना कर दिया था। संस्कृति का स्वाभिमान उनकी नस-नस में बहता था।

महाराज का स्वप्न क्या था?

केवल मराठी प्रांत एवं मराठी भाषियों तक उनकी सोच कभी नहीं थी। आसेतु हिमाचल स्वतंत्र हिंदुस्थान यहीं एकमेव उनका लक्ष्य था। जब एक बार भरी सभा में शिवाजी महाराज से उनके सरदारों द्वारा पूछा गया, ''आपकी महत्त्वाकांक्षा क्या है? हमें कब तक लडना चाहिए?'' तब एक क्षण का भी विलंब न करते हुए स्वयं महाराज ने कहा हुआ वाक्य आज भी किसी मंत्र की तरह हमें हमारी राष्ट्रीयता के गौरव का स्मरण कराता है।

उन्होंने कहा, ''अहद तंजावर, तहद पेशावर (तंजावर से लेकर पेशावर तक) संपूर्ण हिंदुस्थान को हमें स्वतंत्र कराना है।'' मिर्झाराजे जयसिंग को उन्होंने जो पत्र लिखा उसमें इसी स्वप्न को दृढतापूर्वक चित्रित

किया है। हम स्मरण करें २८ अप्रैल १७५८ का वह गौरवशाली दिन जब रघुनाथपंत पेशवा के नेतृत्व में मरहट्टों ने अफगाणिस्तान में स्थित अटक के कीलेपर भगवा ध्वज फहराया। उस समय उन सभी वीरों की यही भावना रही कि हमने छत्रपति शिवाजी महाराज का स्वप्न साकार किया।

छत्रपति शिवाजी महाराज की स्वराज्यनीति का यथार्थ वर्णन हमें श्री रामचंद्रपंत अमात्य द्वारा रचित ग्रंथ आज्ञापत्र में मिलता है। उसमें से कुछ उद्धरण प्रस्तुत विषय के विवेचन में मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।

श्री शिवराय के कार्य के विषय में अमात्य लिखते हैं, महाराज ने धर्मोद्धार किया तथा उसके माध्यम से देव-ब्राह्मण, यज्ञयागादिक कर्मों को सुचारु रूप में प्रवृत्त किया। अन्याय करनेवालों का अपने राज्य में नाम तक शेष न रखा। नये-नये दुर्गों का एवं आरमार (नौसेना) का निर्माण कर एकरूप तथा अव्याहत शासन किया । मानो नूतन सृष्टि का ही निर्माण किया। औरंगजेब जैसे कितने ही महाशत्रुओं को अपने पराक्रम के सागर में डुबाकर दिगंतव्यापी कीर्ति प्राप्त की।

सूत्ररूप में शिवराय की राजनीति को ग्रथित करते हुए अमात्य लिखते हैं –

धर्माचरण, देवतापूजन, सत्पुरुषों का अनुग्रह प्राप्त करा, सभी वर्गों के लोगों का कल्याण करना, तथा राज्य की सर्वंकष अभिवृद्धि करना ये सभी कार्य इस शिवराज्य में अव्याहतरूप से चल रहे हैं। एक स्थानपर अमात्य शिवाजी महाराज के लक्ष्य को शब्दांकित करते हैं, यवनों द्वारा आक्रांत राज्य को पुन: मुक्त करना है। इस पृथ्वी को निर्यवन करना है।

दक्षिण दिग्विजयपर जब वे निकले तो जहाँ-जहाँ यवनों ने मंदिर तोडकर मस्जिदें खडी की थी वहाँ हर मस्जिद तोड़कर उन्होंने वहाँ फिरसे मंदिरों को खडा किया हैं। त्रावणकोर एवं तिरुअन्नामलई में स्थित मंदिर इसके जीते-जागते प्रमाण हैं। महाराज स्वयं धर्माभिमानी हिंदू थे। हेन्री रिव्हिंग्टन जैसा आंग्ल अधिकारी भी शिवाजी महाराज को General of the Hindu Forces कहकर संबोधित करता है।

मंदिर, मूर्तियाँ, वैदिक परंपरा, धर्मग्रंथ, संस्कृत भाषा, गौमाता इन सबके लिए श्रीमहाराज केवल मन से भावुक ही नहीं थे, अपितु इनके सम्मान की पुन:प्रतिष्ठापना करने हेतु कटिबद्ध तथा कार्यमग्न भी थे। धर्मनिष्ठ हिंदू होना और सहिष्णु होना कभी अलग-अलग नहीं हो सकता। हमने कभी किसीपर आक्रमण नहीं किया, लेकिन असहिष्णु एवं पाशवी आक्रांताओं के बीच तेजस्वी बने रहना हमें शिवाजी महाराज ने सिखाया।

शिवाजी महाराज एक असामान्य प्रेरणा

छत्रपति शिवाजी महाराज का सिंहासनपर विराजित होना यह एक असामान्य घटना थी। चहुं ओर भरे घने अंधकार में रायगढपर हिंदुराष्ट्र का एक स्वयंभू सिंहासन सूरज के तेज की तरह चमक रहा था। महाराज की राजमुद्रा संस्कृत में लिखी गयी। यावनी शब्दों का हमारी भाषा से प्रभाव नष्ट हो इसलिए सभी राजनयिक कार्यों में स्वभाषा का प्रयोग हो इस लिए महाराज ने रघुनाथ पंडितजी के हाथों राजव्यवहारकोश का निर्माण कराया।

मंदिर, संत-सज्जन, गौमाताएँ तथा माताएँ अब भयमुक्त हुई थी। भारत के किसी कोने में आज भी एक हिंदू राजा सीना तानकर खडा है यह देखकर देश के हर कोने में कहीं न कहीं स्वाभिमान की ज्वालाएं धधकने लगी। बुंदेलखंड के महाराजा छत्रसाल, आसाम के लाचित बडफुकन की तरह अनेकों योद्धाओं ने भी शिवाजी महाराज से ही प्रेरणा ग्रहण की थी।

आगे चलकर हम देखते हैं कि महाराज के देहावसान के उपरांत भी उनकी प्रेरणा को सर्वस्व मानकर मरहट्टों ने औरंगजेब जैसे बलशाली शत्रु से बिना राजा, बिना सिंहासन के बावजूद महाराज के स्वप्नों को साकार करने के लिए कई वर्षोंतक युद्ध

किया परिणामत: पापी औरंगजेब कोई भी वर्चस्व यहाँ प्रस्थापित ना करते हुए इसी महाराष्ट्र की भूमि में दफन हो गया।

केवल उस समय की बात नहीं, अंग्रेजों के साथ चले हमारे प्रदीर्घ संग्राम में छत्रपति शिवाजी महाराज का चरित्र किसी दिव्य स्फुलिंग की तरह अनेकों युवकों में स्वाधीनता की ललक निर्माण करता रहा। उमाजीराजे नाईक, वासुदेव बलवंत फडके, लोकमान्य तिलक, स्वातंत्र्यवीर सावरकर, नेताजी सुभाषचंद्र बोस जैसे अनगिनत क्रांतिकारियों से लेकर आज के हमारे माननीय प्रधानमंत्री तक अनेकों ने राष्ट्रभक्ति के आराध्य रूप में छत्रपति शिवाजी महाराज को अपने हृदय में किसी देवता की तरह श्रद्धापूर्वक सुप्रतिष्ठित किया हैं।

श्रद्धेय स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज तो हमेशा से कहते आ रहे हैं, '**यह कहने में मुझे कोई अतिशयोक्ति नहीं लगती है कि भगवान श्रीराम एवं भगवान श्रीकृष्ण के बाद राष्ट्रीय आदर्श के रूप में कोई सर्वथैव पूज्य है तो वे छत्रपति शिवाजी महाराज हैं। कृष्णनीति एवं रामराज्य का समन्वय हमें शिवचरित्र में दिखता है।**'

सक्षम स्वाधीनता के पुरोधा

शिवाजी महाराज को पढते हुए हम केवल वीररसपर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकते। वे कृतिशील धर्मनिष्ठ थे। उन्होंने महाभारत जैसे ग्रंथों का केवल धार्मिक हेतु से श्रवण नहीं किया था; उन्होंने अपनी माँ की गोद में हमारे ग्रंथों का मर्मग्रहण किया था। इसलिए तो **समर्थ रामदास स्वामी महाराज** उन्हें केवल राजा नहीं, ''**जाणता राजा**'' अर्थात समझदार राजा कहते हैं।

स्वाधीनता अगर अद्ययावत क्षमताओं से परिपूर्ण न हो तो वह किसी भी क्षण पुन: पराधीनता में विलीन हो सकती है। विद्या-वैभव-धर्मपालन आदि सभी बातें श्रीमहाराज के पूर्वकालीन देवगिरी जैसे हिंदू साम्राज्यों के पास भी थी। फिर भी अल्लाउद्दीन खिलजी जैसे आक्रांताओं ने इन साम्राज्यों को उजाड दिया। इसका कारण था अद्ययावत सामर्थ्य, प्रतिक्षण सावधानता एवं भविष्य को परखनेवाली दृष्टि का अभाव।

शिवाजी महाराज का सबसे अनोखा कार्य था आरमार अर्थात नौसेना का निर्माण। हमें इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि अपनी स्वयं की, संपूर्ण स्वदेशी तंत्र से संसिद्ध नौसेना का निर्माण करनेवाले भारतवर्ष के आद्यशासक शिवाजी महाराज थे। महाराज की नौसेना की युद्धनौकाओं की सामरिक उपयोगिता अन्यान्य विदेशी नौकाओं से कई गुना अधिक थी।

उनकी नौकाओं की परिकल्पनाएँ (Designs) उन्होंने स्वयं बनायी हुई थी यह अपने आप में विशेष बात है; और तो और महाराज का आरमार इतना बलाढ्य था कि उस वक्त जब हमारे पुरखों ने 'समुद्रबंदी' के नामपर देशविदेशों में जलाटन निषिद्ध कर दिया था उस वक्त महाराज की नौकाएं मध्य आशिया के 'मस्कत' तक जाया कर अपना पराक्रम दिखाती थी।

गढ-किलों के निर्माण में महाराज के द्वारा प्रयुक्त तांत्रिक कुशलता ने Technology के विषय में अग्रेसर रहनेवाले अंग्रेजों को भी अचंभित कर दिया। दक्षिण में बनाया गया जिंजी का किला, हमारा रायगड महाराज के तंत्रकुशलता के साक्षी है।

सावधानता के विषय में तो शिवाजी महाराज के जैसा कोई और दिखता ही नहीं। धूर्त अंग्रेजों की आततायी महत्त्वाकांक्षा को भारत में सर्वप्रथम शिवाजी महाराज ने ही पहचाना था। इसलिए कभी कभी लगता शिवाजी महाराज अगर शतायुषी होते तो भारत का नक्शा इतिहास कुछ और होता।

गर शिवाजी न होते सुन्नत होत सबकी!

अगर उस प्रतिकूल समय में इतिहास के पन्नोंपर शिवचरित्र न लिखा जाता तो जो कुछ लिखा जाता उसकी लिखावट कुछ और होती। वेदों का उच्चारण, धर्म का आचरण तथा शास्त्रों का अध्ययन हम अपने-अपने घरों में भी कर पाते या नहीं, कह नहीं सकते। हमारी भाषा, हमारी भूषा, हमारा भोजन, हमारा भजन और हमारे तीर्थक्षेत्र तथा हमारे सनातन हिंदु जीवनमूल्य अपना अस्तित्व किस प्रकार बचा पाते, कह नहीं सकते।

आज हम गीता पढ सकते हैं, पढा सकते हैं, यह शिवाजी महाराज का उपकार है! हम अपने त्योहार खुले आकाश की छाया में मना सकते हैं, यह शिवाजी महाराज का उपकार है! मंदिरों में घंटियाँ, कीर्तनों में तालियाँ, गौमाताओं के गलों में घुंगरू तथा कुलवधुओं के पैरों में पायल निर्भयतापूर्वक निनादित हो रहे हैं यह शिवाजी महाराज का उपकार है! और क्या कहूं? हम अपनेआप को हिंदू कह पाते हैं, यह शिवाजी महाराज का ही हमपर उपकार है!

महाराष्ट्र के पहले मुख्यमंत्री स्व. यशवंतराव चव्हाण जब मुंबई में छत्रपति शिवाजी महाराज के पुतले का अनावरण करने के लिए आये थे तब उस अवसरपर उन्होंने कहा, शिवाजी महाराज न हुए होते तो पाकिस्तान की सीमाएँ हमारे घरों तक आ पहुँचती। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

धर्म के प्रति निष्ठा, परंपराओं के रक्षण में तत्परता, राष्ट्र के प्रति समर्पण, समाज के प्रति दायित्व तथा संत-सज्जनों का सम्मान इन सभी मूल्यों का चिरंतन स्रोत शिवचरित्र है। प्रस्तुत लेखनप्रपंच का यही उद्देश्य है कि हम इन सब बातों का मनन करें और छत्रपति शिवाजी महाराज को यथार्थ रूप में पहचानकर उनके चरित्र को अपने हृदय में सुप्रतिष्ठित करें, जिससे आनेवाले समय में हर प्रतिकूल परिस्थिति में हमारा स्वधर्माभिमान एवं राष्ट्रभक्ति अडिग रहें।

इसलिए समर्थ रामदास स्वामी महाराज ने छत्रपति संभाजी महाराज को महाराज के चरित्र चिंतन का किया हुआ उपदेश आज भी औचित्यपूर्ण है-

शिवरायाचे आठवावे रूप । शिवरायाचा आठवावा प्रताप। शिवरायाचा आठवावा साक्षेप । भूमंडळी ।।

(हम शिवाजी महाराज के व्यक्तित्व का स्मरण करें, उनके पराक्रम का स्मरण करें तथा उनकी कार्यतत्परता का स्मरण करें।)

– श्री. गजानन भास्कर मेहेंदळे

आरती उतार लूं ।

गगन में निरभ्र आज चंद्र को निहार लूँ !
मगन हो पुनश्च रामचंद्र को निहार लूँ !! ..धृ.
हृदयसिंधु में मृदंग सा तरंगनाद है
सदय इष्टदेव दूर कष्ट औ विषाद है
भानुवंश की हि आज आरती उतार लूँ ..।।१।।
श्याम रामचंद्र इंदुकुंदगौर जानकी
अवध राजती प्रभा प्रकाश के निधान की
रामनाम पुण्यधाम वाणि से उचार लूँ ..।।२।।
मंद मंद वायु तुलसिगंध से समृद्ध है
कंठ कंठ भाव के प्रभाव से निरुद्ध है
शब्द चार आज वाल्मीकि से उधार लूँ ..।।३।।

– प्रणव जनार्दन पटवारी

दैवासुरसंपद्विभागयोग (छः)

सद्गुणों की साधना

परमपूज्य गुरुदेव द्वारा की गयी, श्रीमद्भगवद्गीता के सोलहवें अध्याय की व्याख्या (विगत पाँचवी किश्त) में हम ''दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्'' के अंतर्गत 'दान' नामक सद्गुण की विस्तृत व्याख्या में उसके अर्थ एवं प्रकार देख रहे थे। (अब आगे)

प.पू. गुरुदेव 'दान' की व्याख्या करते हुए आगे कहते हैं–

''अर्जुन का संपूर्ण व्यक्तित्व ही दान से भरा हुआ है। वह जिसको जिस वस्तु की आवश्यकता है, उसे देने के लिए सदैव तत्पर रहता है। एक उदाहरण आपको बतलाता हूँ – देखो, दैवी सम्पद् समझते–समझते हमें अर्जुन समझ में आ जाना चाहिए। उससे थिओरी और प्रेक्टिकल दोनों आपके ध्यान में आ जायेंगे। अर्जुन हमारा आदर्श पुरुष है।

दान एवं नियमों का निरपेक्ष पालन:–

इंद्रप्रस्थ का प्रसंग है। पांडवों को नया–नया राज्य मिला था। अचानक एक ब्राह्मण एक रात को चिल्लाता हुआ आया कि कोई चोर उसकी गायें अभी चुराकर ले गया है। उसे वे दिलायी जायें। अर्जुन ही वहाँ दौड़ते हुए आया... कहीं कोई आक्रोश है, कोई पुकार रहा है तो मैं पहले दौड़कर जाऊँ! यह विचार मन में आना ही दैवी संपत्ति है। जहाँ कहीं दर्द है, जहाँ कहीं मेरी आवश्यकता है, तुरंत दौड़ करके जाना। लेकिन, हमारे मन में यह विचार आता है,– 'Why should I ?' और अर्जुन के मन में आता है, – 'Why should not I?' बस, हममें और अर्जुन में यही अंतर है।... ब्राह्मण देवता ने आर्त स्वरों में कहा– ''मेरी गायें चोर भगाकर ले गये हैं। यदि मुझे गौएँ नहीं मिली, तो मैं यहीं रोता–रोता अपने प्राण त्याग दूँगा।''

अब संजोग की बात यह थी कि अर्जुन के शस्त्र, उस समय द्रौपदी के अंत:पुर में थे और उस समय वहाँ धर्मराज थे।– (जैसा कि नारद जी ने नियम बना दिया था कि द्रौपदी पाँचों पांडवों की पत्नी है; लेकिन एक की पत्नी की भूमिका उसकी १ वर्ष में केवल २ महीने और १२ दिन की रहेगी। और जिस समय जिसकी बारी नहीं होगी और वह यदि उसके अंत:पुर में प्रवेश करेगा, तो उसे १२ वर्ष के वनवास का दंड स्वीकारना पड़ेगा।) अर्जुन ने तत्क्षण निर्णय लिया और अन्त:पुर से शस्त्र लाकर ब्राह्मण को आत्महत्या से बचाया। भले ही स्वयं ने नियमानुसार १२ वर्षों का वनवास स्वीकार कर लिया। यद्यपि चारों पांडवों और द्रौपदी के मना करने तथा समझाने के बाद भी उसने नियम का पालन करते हुए वनवास काटा। यह है अर्जुन का अभयदान और प्राणदान के साथ ही निर्धारित नियमों का निरपेक्ष रूप से पालन!

मूल मुद्दा दान देते समय देने की, सहभागिता की, अपना ऋण चुकाने की, कर्तव्यपूर्ति की, जितनी-जितनी भावनाएँ हमारे मन में होगी, उतना-उतना हमारा दैवी स्वभाव निखरता जाएगा। **'दानं दमश्च यज्ञश्च...'**

समयदान:-

आज राष्ट्र को बहुत बड़ी आवश्यकता यह है कि युवावस्था में हम हमारा कम से कम एक या दो वर्ष केवल देश की सेवा में अर्पण कर दें। अपने परिवार को तो मुझे पालना ही है। संसार तो मुझे करना ही है। लेकिन, केवल मैं और मेरा परिवार इससे भी तीव्र, acute आवश्यकता मेरे राष्ट्र को होगी, तो उसके लिए मुझे 'समयदान' देना चाहिए। जैसा कि सभी जानते हैं, संघ का सारा कार्य लोगों द्वारा दिये गये ऐसे 'समयदान' से ही चला है और आज भी चल रहा है।

स्वामी विवेकानंद जी ने भी देश के युवा वर्ग से यही आह्वान किया था। जरा विचार करें, भगवान को मुरझाए हुए फूल चढ़ाए जाने की अपेक्षा, ताजा और सुगंधित पुष्पों के चढ़ाने का महत्त्व कुछ और ही होता है! हमारी भारतमाता भगवान से कम है क्या? भगवान को भी यहीं अवतार लेने की इच्छा होती है। ऐसी है भारतमाता! उसके लिए अगर मुझे दो-चार वर्ष देने पड़ें, तो उसे मुझे अपना सौभाग्य मानना चाहिए।

दान अत्यंत उच्च इसलिए है; क्योंकि आगे चलकर हम अठारहवें अध्याय में देखेंगे कि भगवान कहते हैं, '' बाकी कुछ भी छोड़ दिया तो चलेगा; पर दान नहीं छोड़ सकते, दान करते ही रहना है। **'यज्ञ दान तप: कर्म न त्याज्यम्'**- यज्ञ, दान और तप इन तीनों कामों से जीवनभर छुट्टी नहीं। यह इतना महत्त्वपूर्ण शब्द है। भगवान के द्वारा चुने हुए जीवनमूल्यों में 'दान' का महत्त्व हम समझें।

दम

''दानं दमश्च यज्ञश्च...''

इसके पश्चात प.पू. गुरुदेव हमें अगले सद्गुण 'दम' के विषय में बताते हुए कहते हैं,''दैवी-जीवन वह होता है, जिसमें मनुष्य का अपनी इंद्रियोंपर पूरा नियंत्रण हो; क्योंकि हम जो कुछ कार्य करते हैं, वह इंद्रियों के माध्यम से ही तो करते हैं।

इस संबंध में उपनिषदकार हमें एक सुंदर रथ की कल्पना करते हुए बताते हैं कि-

शरीर एक रथ है, बुद्धि सारथी है, आत्मा रथी है, मन लगाम है और इंद्रियाँ घोड़ों के समान हैं।

अत: रथी का, सारथी का अपने अश्वोंपर नियंत्रण आवश्यक है। यदि नहीं रहा, तो ये अश्व उसे न जाने किस दिशा में ले जाएंगे? अत: इंद्रियों के ऊपर नियंत्रण जीवन की बड़ी आवश्यकता है।

जीव को अपना जीवन सँवारकर किसी महान कार्य में लगाना हो, तो इंद्रियोंपर नियंत्रण आवश्यक है। और इसीका नाम है 'दम'! एक शब्द और आता है, वह यहाँपर नहीं है, लेकिन अन्य स्थानोंपर है, वह है... 'शम'! मन के नियंत्रण को कहते हैं 'शम'और इंद्रियों के नियंत्रण को कहते हैं 'दम'।

मेरी आँख, मेरे कान, मेरे हाथ-पैर आदि कर्मेंद्रियोंपर, मेरी ज्ञानेंद्रियों का नियंत्रण होना चाहिए। अब देखो, एक बात है, यदि शम (मन पर नियंत्रण) होगा तो दम (इन्द्रयों पर दमन) की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। अर्थात मन ही चंचल नहीं हुआ, तो इंद्रियाँ बिखरेंगी ही नहीं। ये आपको गड्ढे की ओर ले जाएंगी ही नहीं। लेकिन हम संसार में रहते हैं। यहाँ कई घटनाओं, लोगों, दृश्यों, वस्तुओं को देखकर हमारा मन विचलित होता है। मन विचलित हो गया, तो भी चलेगा; लेकिन मन का यह विचलन कभी भी इंद्रियों तक नहीं उतरना चाहिए। पहली बात तो कोई कुविचार मेरे मन में ही नहीं आना चाहिए। यदि आ गया, तो भी मेरी कर्मेन्द्रयों द्वारा वह कृत्य नहीं होना चाहिए। इसके लिए आवश्यकता होती है 'दम' की....

अर्जुन के जीवन में,'दम' का एक प्रसंग देखिए। हस्तिनापुर के दरबार में जहाँपर द्यूत हुआ...... शकुनि के उकसानेपर धर्मराज ने द्रौपदी को दाँवपर लगाया और बाद में दु:शासन उसको घसीटकर ही दरबार में लाया।

प्रसंग आप जानते हैं। द्रौपदी वहाँ करुण क्रंदन कर रही है, न्याय की माँग करके सहायता की आशा से चारों ओर देख रही है। हैरत है कि उसके अत्यंत पराक्रमी पाँचों पति नि:सहाय से बैठे हैं।

इस समय केवल भीमसेन को क्रोध आया और उसने सहदेव से कहा,– ''तुम अग्नि लेकर आओ। मैं द्यूत खेलनेवाले बड़े भैया के हाथ अभी सबके सामने जलाना चाहता हूँ।'' बड़ी विचित्र बात यह है कि अर्जुन वहीं बैठे थे। अर्जुन ने भीमसेन का हाथ दबाया और कहा, ''चुप रहो।'' जो रोष भीम के अंदर है, क्या वह अर्जुन के अंदर नहीं हैं? अर्जुन भी अंदर से तिलमिलाये हुए थे, लेकिन रोष प्रकट करने का यह समय नहीं है, प्रसंग नहीं है – अत: अर्जुन ने स्वयंपर नियंत्रण रखा। इसको कहते हैं– 'दम'।

मन में भावना उभरनेपर भी इंद्रियों के स्तरपर उस भावना को रोक लेने की क्षमता **'दम'** कहलाती है।

ऐसे दम का परिचय भीमसेन ने भी दिया है। पाँचो ही पांडव दैवी संपत्ति से युक्त हैं। भीम का दम कैसा है?

भगवद्‌गीता का सही–सही अर्थ आपको तभी पता लगेगा, जब आप महाभारत जानेंगे। यह मैं इसलिए कहता कहा हूँ कि 'भगवद्गीता का सर्वोत्तम भाष्य महाभारत है।' भगवद्‌गीता का अध्ययन महाभारत के आलोक में करेंगे, तब ही आप उसके सही अर्थ तक पहुंचेंगे। नहीं तो आपको कोई कहीं बहा ले जाएगा। इस्कॉनवाले कहीं बहाकर ले जाएंगे और विनोबा जी कहीं और, कोई और कहीं... सब गड़बड़ हो गयी है। इसलिए महाभारत का अध्ययन आवश्यक है।

भीमसेन के मन में भी भावनाओं का क्षोभ हुआ; लेकिन उसने भी अपने को रोका ऐसा भी एक प्रसंग है। जब द्रौपदी को विराटनगर में कीचक ने भरी सभा में अपने पद से प्रहार किया, बाल खींचते हुए लाया और लात मारी, तो रात में जब द्रौपदी भीमसेन के पास जाकर रोयी, भीमसेन को लगा कि अभी के अभी कीचक का वध कर दूँ! लेकिन, भीमसेन ने द्रौपदी के हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, ''द्रौपदी, केवल २ सप्ताह बचे हैं अज्ञातवास के।'' इंद्रियों का नियंत्रण, मन में भावनाओं का क्षोभ था; लेकिन विवेक से उस समय भीम ने स्वयंपर नियंत्रण रखा। दूसरे दिन, रात्रि में कीचक का वध कर दिया; लेकिन उस समय नियंत्रण रखा।

अत: चित्त में भावनाओं का क्षोभ होने के पश्चात भी इंद्रियों को पूरा संयमित रखना– यह दम का लक्षण है।

आगामी अंक में हम यज्ञ, स्वाध्याय और तप नामक सद्‌गुण के विषय में जानेंगे। (क्रमश:)

– श्रीमती वंदना वर्णेकर।

-: श्रद्धांजलि :-

बिकानेर *निवासी सुविख्यात विद्वत्शिरोमणि तपस्वी संत पूज्य स्वामी संवित् सोमगिरि जी महाराज के ब्रह्मलीन होनेकी वार्ता से हृदय विदीर्ण हो रहा है! बिकानेर का जाया–जन्मा एक युवक इंजीनियरिंग करता है, बतौर व्याख्याता पढ़ाता है और फिर एक दिन संन्यास लेकर अर्बुदाचल की पहाड़ियों में खो जाता है। लेकिन मातृभूमि के सेवा के लिए पूर्व बीकानेर में शिवबाड़ी के लालेश्वर मंदिर को संभालता है और यह मंदिर जो तब तक असामाजिक तत्त्वोंका ऐशगाह बन चुका होता है, देखते ही देखते उसे अध्यात्म और संस्कृति का महान केंद्र बनाते है। अगाध वैदुष्य, प्रखर धर्मनिष्ठा, अतुलनीय गीता प्रचार और संमोहक धाराप्रवाह वक्तृत्व में ये महापुरुष अद्वितीय रहे! गीता को घर–घर पहुंचाने का अभियान तो जैसे बिकानेर शहर के संवित सोमगिरीजी के प्रति श्रद्धा, विश्वास और समर्पण का जीता–जागता प्रमाण है। उनका चिरवियोग भारतीय संस्कृति की अपूरणीय क्षति है! साश्रु साभिवादन श्रद्धांजलि! ॐ शांति:!*

– स्वामी गोविंददेव गिरि

॥ धर्मश्री ॥

जन-जन का सपना राम मंदिर अपना

प्रत्येक भारतीय के हृदय में रहता है वह 'राम'! फिर वह व्यक्ति विश्व के किसी भी कोने में क्यों न रहता हो, पर हृदय में 'राम' को लेकर जिह्वापर 'राम' का नाम लेकर ही, आज से कुछ वर्षपूर्व तक जब इस राम को याद करके अयोध्या जाते, तो राजगृह में जन्मे-पले अपने राजा राम के जन्मस्थान के दर्शन करने जाते, वहाँ की धूल माथेपर लगाते वह 'वैभव', वह 'अनुभूति' लेने की इच्छा से जाते; पर लौटते समय एक टीस 'मन में लेकर लौटते। हमारे 'रामलला' एक टाट के बने छोटे कमरे में बंद है। वहाँ से उठकर कब अपने 'राजगृह' में आयेंगे? तब सबके मन में एक ही बात होती, ''एक भव्य मंदिर'' की, जिसमें अपने संपूर्ण दिव्यत्व के साथ रामजी बिराजेंगे!

कितनी पीढियाँ यह सपना आँखों में लिये चली गयी, कितनों ने ही बलिदान दिया, पर जैसा कि हमारा इतिहास है भारतमाता के पुत्रों का बलिदान व्यर्थ नहीं जाता, कोई सपना अधूरा नहीं रहता।

आनेवाली पीढी उन सपनों को साकार करने के लिए कृतसंकल्प होती है। ऐसा करते समय कोई मनमानी नहीं होती। नियम व न्याय की परिधि का मान रखकर ही कार्य होते हैं।

अत: न्यायालय के निर्णयतक की प्रतीक्षा लंबी थी; पर धैर्य के साथ और विश्वास के साथ उस 'प्रतीक्षाकाल' में भी नियोजन के साथ कार्य की रूपरेखा के अनुसार सभी अपने दायित्वों को लेकर सचेत थे।

न्यायालय में 'राम' को तो न्याय मिलना ही था और वह स्वर्णिम दिन आया; ९ नवंबर २०१९ को जब सुप्रीम कोर्ट ने रामजी को न्याय दिया। अब मंदिरनिर्माण का कार्य प्रत्यक्ष में कार्यान्वित होना था। तब यह सब सुचारु रूप से हो इस हेतू एक 'न्यास' का गठन फरवरी २०२० में किया गया, जिसमें भारत के बड़े राष्ट्रीय संत, गणमान्य नागरिक, विविध क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। न्यास को विशेषरूप से किसी संस्था या राजनीति से इसे दूर रखा गया। जो भी यहाँपर था, वह 'रामजी का रामकाज करने आतुर था।'

न्यासमंडल का गठन

हम एक छोटा कमरा भी बनाना चाहे तो आर्थिक व्यवस्था के साथ व्यवस्थित नियोजन करना होता है। और यह तो एक ऐतिहासिक मंदिर वह भी 'भव्य-दिव्य', 'राजा-राम' की शोभा बढ़ानेवाला, उनकी गरिमा का ध्यान रखें ऐसा प्रत्येक भारतीय की आँखो में 'संजोये' सपने को साकार करनेवाला ऐसा बनें यही सबकी इच्छा थी। न्यास इस हेतू कटिबद्ध था। जितनी आवश्यकता है उससे अधिक निधि खड़ा करना यह कठिन कार्य नहीं था, परंतु इस कार्य की धुरा

सँभाल सके ऐसी व्यक्ति कोषव्यवस्था का दायित्व लें यह आवश्यक था।

वर्तमान वैश्विक स्थिति, भौतिकता के पीछे दौड़ता संसार, पैसा, प्रसिद्धी ही सबकुछ ऐसे वातावरण में नि:स्पृह, निरासक्त, वैयक्तिक सुख-सुविधाओं से दूर आध्यात्मिकता के आधार पर राष्ट्रहित में कार्यरत ऐसी व्यक्ति इस दायित्व के लिए योग्य हो सकती थी।

साथ ही दूरदृष्टि के साथ योजनाकर आज के युग में विज्ञान एवं तकनीकी में विश्वास कर, अपने आध्यात्मिक आधार के साथ उसे जोडकर कार्य करने में तत्पर हो यह भी आवश्यक था। तब समस्त न्यासी एवं गणमान्यों द्वारा एक मुख से कोषाध्यक्ष के दायित्व के लिए **प. पू. स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज** को इस हेतु पूछा गया। 'यह कार्य रामजी का है, उन्होंने ही मुझे सौंपा है।' इसी भावना से इसे गुरुजी द्वारा स्वीकारा गया।

जैसे ही इस दायित्व की विधिवत घोषणा हुई, पू. स्वामीजी के हजारों अनुयायी, समस्त वेदविद्या प्रतिष्ठान, संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल, गीता परिवार, साधना शिविर के साधक, प्रवचन आदि के माध्यम से उनसे जुडे हजारों लोग सभी के लिए वह क्षण आनंद का, गौरव का रहा। आज के इस युग में कोष से जुडी हर बात, 'काजल की कोठरी लगती है', उसमें से बेदाग निकलनेवाले बिरलों में 'पू. स्वामीजी' एक है यह विश्वास सभी को था। फिर पू. स्वामीजी ने भी इस दायित्व को बड़ी धैर्य के साथ उठाने का निश्चय किया।

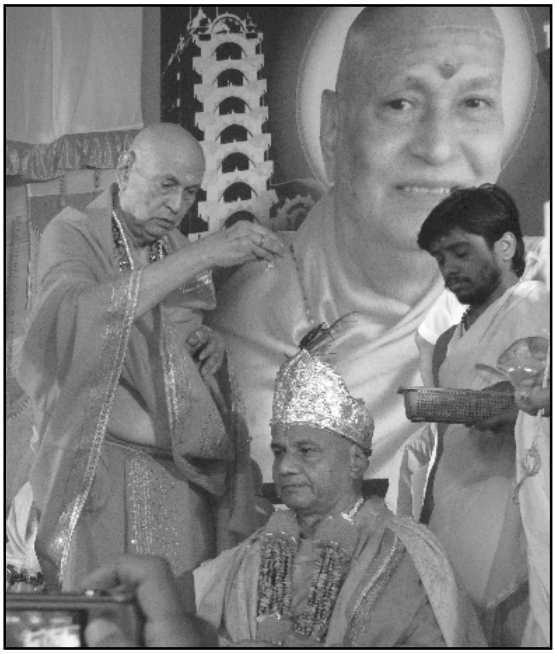

गुरु का सपना साकार

प. पू. स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज का कोषाध्यक्ष के लिए नाम आगे आना और उन्हें यह दायित्व सौंपना इसके पीछे रामजी की ही इच्छा थी यह तो निश्चित, परंतु इसका एक और कारण उनके श्रद्धेय सद्‌गुरु ब्रह्मलीन स्वामी सत्यमित्रानंदजी के आशीर्वाद भी हैं ऐसा कहना उचित होगा, जिनसे पू. स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी ने संन्यासदीक्षा पायी थी।

उन सद्गुरु स्वामी सत्यमित्रानंदजी ने खुले मंच हजारों अनुयायियों के सम्मुख उनका पट्टाभिषेक कर उन्हें अपना 'आध्यात्मिक उत्तराधिकारी' बनाया था। भौतिक उत्तराधिकार देना-लेना आमतौर पर सहज है, परंतु 'आध्यात्मिक उत्तराधिकार' में सद्‌गुरु को अपने जीवन का समस्त तप, साधना, ज्ञान ऐसा सारा आध्यात्मिक संचित जो दृश्य नहीं है, पर अनुभव होता है, उसे देने के लिए योग्य शिष्य मिलना कठिन होता है।

और शिष्य को भी इस अधिकारपर खरा उतरने के लिए मनोबल, संयम, दृढता के साथ उतनी ही आध्यात्मिक प्रगल्भता एवम् नि:स्पृहता, निरहंकारिता उसमें होना भी महत्त्वपूर्ण आवश्यक बात होती है। पीछे मुडकर देखे तो स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी ने अंतिम समय में स्वामी विवेकानंद के मस्तकपर हाथ रखकर, 'तुम्हें अपना सबकुछ देकर मैं अब रिक्त हुआ' कहकर दिया हुआ आशीर्वाद याद आता है।

जैसे ही कोषाध्यक्ष के लिए पू. स्वामीजी के नाम की घोषणा हुई, सभी के स्मृतिपटल पर उपरोक्त घटना याद आयी।

क्योंकि प्रभु 'श्रीराम' उनके सद्‌गुरु के आराध्य थे। वे अपने जीवनकाल में मंदिर के निर्माण हेतु अनवरत निरंतर प्रयासरत रहे, उनके महानिर्वाण पश्चात एक वर्ष में ही उनके पट्टशिष्य को राममंदिर न्यास में होना और उन्होंने एक महत्त्वपूर्ण दायित्व को स्वीकारना यह संयोग नहीं तो 'रामजी' की इच्छा ही होगी।

अपूर्व नियोजन

मंदिरनिर्माण के दृष्टिकोण से बैठके लेना, विचारविनिमय करना, योजना बनाना इसका प्रारंभ हो चुका था। मंदिर की रूपरेखा के लिए विख्यात, निष्णात शिल्पकार, वास्तुकार श्री. चंद्रकांतजी सोमपुरा का नाम आगे आया। इनके दादाजी ने ही सोमनाथ मंदिर की रूपरेखा बनायी थी। सोमपुरा जी ने नागर शैली में

राममंदिर की रूपरेखा बनायी। मंदिर बनाने का कार्य ‘लार्सन टूब्रो’ इस कंपनी को सौंपा गया। मंदिर राजस्थान के भरतपुर में मिलनेवाले बलुआ पत्थर से बनेगा यह भी निश्चित किया गया। प्रस्तावित मंदिर ३६० फू. २३५ फू. १६१ फू. विस्तार का होगा।

इस समग्र योजनापर विचार होने के पश्चात यह कार्य कुछ करोड रुपयों का कोष हो तब ही संभव है, यह स्पष्ट था। भारतमाँ के २-४ लाडले इस कार्य को संपन्न कर सकते थे, वैसा प्रस्ताव भी न्यास के पास आया था। विदेश में बसे भारतीय तो हँसते-हँसते पूरा कोष ही जुटा सकते थे। परंतु यह लगभग ५०० वर्षों के संघर्ष की जीत किसी एक व्यक्ति अथवा कुछ लोगों की नहीं थी। यह तो हर एक जन हृदय का मंदिर था। अत: यह निश्चय हुआ कि हर घर-घर से हाथ आगे आयेंगे और इस निधिकुंड में अपनी समिधा अर्पित करेंगे।

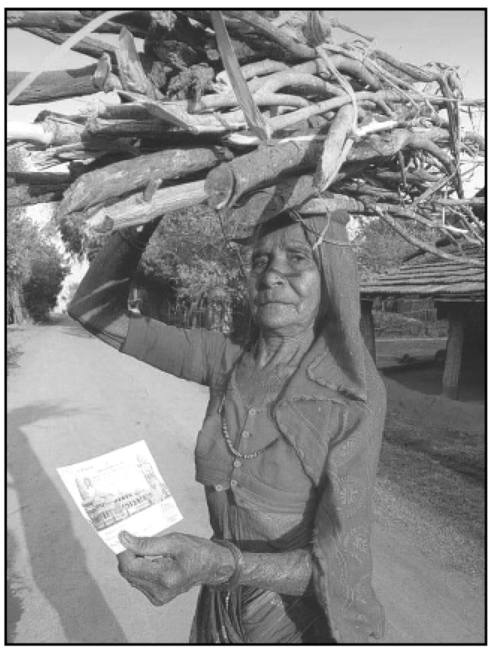

१९८९ में रामशिला पूजन में केवल सवा रुपया करोंडो व्यक्तियों ने दिये थे। सभी राज्य, सभी जातियाँ, धर्म सबका सहयोग हमें चाहिए था। कन्याकुमारी का विवेकानंद शिलास्मारक भी हमारे सामने प्रेरणादायी था। यह समाज अपने आराध्य के वैभव के लिए दिल खोलकर सारा त्याग करता है ऐसा पूर्व इतिहास हम जानते थे। इसलिए भारत के जन-जन से जुड़कर भिक्षा इकट्ठा करने का संकल्प हुआ। ३० वर्ष पहले शिलापूजन अभियान के वक्त जन-जन से जुड़ना इतना सरल नहीं था, पर तब भी वह सफलता से हुआ।

फिर आज प्रगत तकनिकी हमारे पास थी, जिससे निधिसंकलन का कार्य थोड़ा सरल हुआ। फिर भी यह काम चुनौती भरा तो था ही, इसका विस्तार भी अधिक था। साथ ही ‘वैश्विक’ स्तर का था। और तो और अभियान कोरोना के भीषण संकट के दौर में चलाना था इसलिए सुरक्षा, पारदर्शिता के साथ काम करना आवश्यक भी था। इस सभी बातों को ध्यान में रखकर पूर्व व पूर्ण नियोजन के साथ ‘निधिसंकलन’ की कुछ प्रमुख बातें निर्धारित की गयी। इस हेतु प्रथमत: प्रेसवार्ता, पत्रकार परिषद आदि हुए।

* भारत की संपूर्ण जनसंख्या तक, एक-एक व्यक्ति तक कार्यकर्ता प्रत्यक्ष पहुँचे यह तो संभव नहीं था; परंतु हर एक गाँव, शहर, कस्बा, गली हमसे छूट न जाये इसलिए एक व्यापक जनसंपर्क की योजना हमने बनायी। इस योजना से हर गाँव/घर को मानो लगता था कि ‘रामजी’ हमारे घर पधारे हैं। इस दृष्टि से भारत के पाँच लाख गाँवों तक पहुँचकर ११ करोड़ परिवारों से प्रत्यक्ष संपर्क का लक्ष्य निर्धारित किया गया। गाँवो का चयन भी हुआ।
* निधिसंकलन के लिए द्वार-द्वार संपर्क हेतू राज्य से गाँव व गाँव के विभिन्न क्षेत्र तक जाने के लिए चमू (Team) बनायी गयी।
* राशि एकत्रित करने के लिए निर्धारित राशी के १० रु., १०० रु., १००० रु. के कूपन बनाये, जो निधिसंकलन के लिए जानेवाले चमू को दिये गये। २००० रु. या अधिक राशि के लिए रसीद देनी थी।

* राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह मा. भैय्याजी जोशी द्वारा इस पूरे अभियान को नियोजन व मार्गदर्शन प्राप्त था।
* श्रीरामजन्मभूमि मंदिर निधिसमर्पण अभियान की सफलता के लिए राज्य, प्रांत, जिला, ग्राम स्तरपर नवंबर में अनेक बैठके ली गयी। प्रत्येक स्तरपर अभियानप्रमुख, सहप्रमुख व कोषप्रमुख का दायित्व चयनित व्यक्तियों को सौंपा गया।
* ऐसे पूर्ण नियोजन के पश्चात् इस अभियान की विधिवत घोषणा न्यास के अध्यक्ष व कोषाध्यक्ष के द्वारा की गयी, साथ ही दिसंबर माह में तीर्थक्षेत्र न्यास ने इसका पहला विज्ञापन भी प्रसारित किया। और फिर शुरू हुआ ऐतिहासिक अभियान!
* नवंबर २०२० में सभी प्रांतो में प्रांतीय स्तर की बैठके हुई उसमें हर प्रांत की निधिसमर्पण समिति का गठन हुआ। दिसंबर २०२० में साधुसंत व श्रेष्ठीजनों की बैठकें, उसीके साथ प्रांत, जिला, प्रखंड, नगर स्तरोंपर बैठकें लेकर समस्त स्तरोंपर अभियानप्रमुख, सहप्रमुख व निधिप्रमुख ये तीन दायित्व निश्चित किये गये। शहरों, नगरों के लिए पोस्टर्स, स्टिकर्स, होर्डिंग्ज, बॅनर्स बनवाकर लगाये गये।
* दिसंबर माह में ही श्रीराममंदिर तीर्थक्षेत्र- न्यास ने सभी प्रमुख अखबारों में विज्ञापन दिये। निधि संकलन का हिसाब व्यवस्थित व दैनिक रूप से रखा जाय इसलिए वर्तमान की डिजिटल तकनिकी का अत्यंत श्रेष्ठ पद्धति से उपयोग किया गया।
* नगरस्तर तक के जमाकर्ता को एक ID No. दिया गया था, जो उसकी पहचान के साथ ही बँक तथा ॲप में भी उपयोगी था। लगभग ३५००० जमाकर्ता नियुक्त किये गये। अभियान के लिए ॲप की सुविधा हैद्राबाद के संघ कार्यकर्ता श्री. सुंदरनारायण जी मूर्ति की धनुष्य इन्फोटेक कंपनी ने निधिसंकलन ॲप बनाया गया।
* ॲप के उपयोग का प्रशिक्षण प्रत्येक जमाकर्ता को कराया गया, इस हेतु प्रांत से प्रखंड स्तर तक के लिए १०० से अधिक कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। रचना ऐसी बनायी गयी थी कि निर्धारित बँक की किसी भी शाखा में धनराशि जमा होते ही ॲप द्वारा केंद्रीय कार्यालय को सूचना मिलती थी। उस वक्त केंद्रीय कार्यालय में २५ तकनिकी तज्ञ कार्यकर्ता दिन-रात कार्यरत थे।

अभियान के दौरान न्यास के कोषाध्यक्ष भी प्रतिदिन पूरी जानकारी लेते थे। स्वयं भी डिजिटल माध्यम से पूरे अभियान से जुडे रहते व हर पल की जानकारी रखते थे। जमाकर्ता अपने ID द्वारा रोज रात को ॲप में अपनी बस्ती की जमाराशि, कूपन, रसीद, धनादेश की जानकारी भरता था। उसके नामपर रसीदबुक, कूपनपुस्तक विवरण के साथ दिखते, जिनसे उस दिन का हिसाब Tally होता था।

संपर्क व निधिसंकलन का प्रारंभ

* **१५ जनवरी २०२१ को भारत के प्रथम नागरिक राष्ट्रपति मा. श्री. रामनाथजी कोविंद से प्रथम संपर्क कोषाध्यक्ष पू. स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी**

महाराज द्वारा कर '**श्रीरामजन्मभूमि मंदिर निधिसमर्पण अभियान**' का शुभारंभ किया गया।

* इसी दिन मा. श्री. मोहनजी भागवत द्वारा दिल्ली के वाल्मीकि मंदिर में और पू. स्वामी अवधेशानंदजी महाराज द्वारा नागपुर की लालगंज सेवाबस्ती में संपर्क कर देश में अभियान की ओर शुरुआत की थी। फिर शुरु हुआ यह महाअभियान।

* दि. १६, १७ जनवरी २०२१ तक समस्त राज्यों के मुख्यमंत्री व अन्य वरिष्ठों ने 'रामसेवक' बन गणमान्य व्यक्ति से अभियान निधिसंकलन के कार्यका अपने-अपने राज्य में श्रीगणेश किया। पश्चात् राज्य के नगर-नगर तक डगर-डगरपर यह रामदूतों की टोलियाँ '**जय श्रीराम**' के घोष के साथ पहुँचती और घर-घर के 'रामदास' इनका स्वागत करके निधि समर्पित कर हर्षित होते। जैसा पहले कहा है, प्रत्येक भारतीय के ह्रदय में श्रीराम बसते हैं। इस निधिसंकलन के संपर्क अभियान में यह अनुभव व इसकी अनुभूति हजारों कार्यकर्ताओं को प्रतिक्षण हुयी।

* दिनभर सारे कार्यकर्ता जनजन तक जाकर निधिसंकलन करते और तुरंत ही रात को सारा हिसाब करके दूसरे दिन सारी राशि बँक में जमा हो जाती। आश्चर्य की बात तो यह है कि यह सारा अभियान ''न भूतो न भविष्यति'' हुआ पर इतने बड़े अभियान में एक भी भ्रष्टाचार या बुरी घटना नहीं हुई। सारा देश इस अभियान में बढ़चढ़कर भाग ले रहा था। हमारे ईशान्य भारत में भी इतनी समस्याएँ और ख्रिश्चन मिशनरीयों

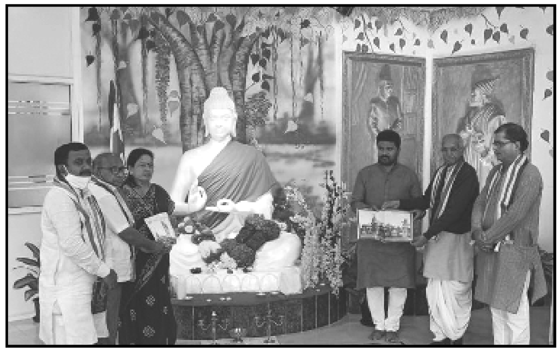

का प्रभाव होने के बावजूद भी वहाँ का लोकप्रतिसाद आशा से भी अधिक था।

* अरुणाचल के १८००, मेघालय के ११००, नागालँड में ४०० गाँवो में रामसेवक पहुँचे। नागालँड में ८७% ख्रिश्चन हैं, परंतु वहाँ जो सुखद अनुभव था वह आशा से परे था। लोगों ने तो समर्पण किया ही, ख्रिश्चन विधायक एवम् ख्रिश्चन मंत्रीयों ने भी अपना योगदान दिया। यह सब सहर्ष था, कोई आग्रह नहीं किया था। शिलाँग के ख्रिश्चन फादर ने सभी से कहा, यह धार्मिक नहीं बल्कि राष्ट्र का विषय है। हमारे जम्मू काश्मीर में एक समय भारत का नाम और वंदे मातरम् कहना गुनाह था वहाँपर भी हमारे रामसेवकों ने जाकर, जय श्रीराम बोलकर जम्मू कश्मीर के ६०५३ गावोंमें से ४६९३ गाँव और ८ लक्ष परिवारोंमें से ६३७०९८ परिवारों तक जाकर निधिसमिधाएँ इकठ्ठा की। इसी बात से ही हम अंदाजा लगा सकते हैं कि यह अभियान कहाँ तक पहुँच गया था। यह बातें सामान्यजन के लिए प्रेरणास्पद थी।

* अरुणाचल और भारत-तिबेट की सीमापर स्थित अनेक गाँवों में भी यह समर्पण अभियान पहुँचाने में हमारे रामसेवक सफल रहे।

* झारखंड जैसे वनवासी बहुल राज्य से वनवासियों ने भी अत्यंत श्रद्धा से इसमें सहभागिता ली। कुछ विरोधी तत्त्वों ने उनको भ्रमित करने का प्रयास भी किया परंतु उनका उत्तर था, 'हम राम के हैं राम हमारे हैं।' बस! केवल ४४ दिनों में ५ लाख ३७ हजार स्थानों में संपर्क कर ११ करोड ७३ लक्ष परिवारों से जुड़ना अपनेआप में विक्रम ही था।
* इस अभियान में जुडा हर रामसेवक निधिसंपर्क करते वक्त देश के हर आत्माराम से मिला है। वह एक अनुभूति लेकर लौटा है। भारत में समाये हुए विशाल रामभक्ति का उन्होंने दर्शन पाया है। रामसेवकों को आये इस अभियान के अनुभवोंपर एक स्वतंत्र पुस्तिक बन जाये इतने सारे अनुभव इस अभियान से हर रामसेवकने पाये हैं। जीवनभर की पूँजी इस अभियान से उन्हें मिली है। राष्ट्र से ग्राम स्तर तक कार्यकर्ताओं की टोलियाँ कार्यरत थी, साथ ही न्यास के न्यासी गण व अन्य पदाधिकारी भी इस कार्य में संलग्न थे।

कोषाध्यक्ष की सहभागिता

उल्लेखनीय बात यह रही कि न्यास के कोषाध्यक्ष भी उन ४४ दिनों में निरंतर इस संपर्क अभियान में कार्यरत थे। कहते हैं कि टोलीनायक उत्साही और स्वयं काम करनेवाला हो तो, टोली का भी उत्साह बढ़ता है।

प. पू. स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज के कार्य को देखते हुए यही कहा जा सकता है कि **'आधी केले, मग सांगितले'**। हमारे कोषाध्यक्ष एक सेनापति की तरह उदाहरण बन राष्ट्रव्यापी दौरेपर ही निकले थे। अथक संपर्क कर समर्पणराशि जुटा रहे थे।

पू. स्वामीजी का अभियान तो दिसंबर से ही प्रेरणायात्रा के रूप मे प्रारंभ हुआ था। हैद्राबाद, औरंगाबाद, परभणी, मुंबई, चैन्नई, हरिद्वार, पंजाब, गुजरात आदि स्थानोंपर अभियान की विस्तृत जानकारी देकर, वे प्रेरणा देते रहें।

– संक्षेप में यही, कहा जा सकता है कि नेतृत्व क्रियाशील करके दिखानेवाला अनुकरणीय हो तो प्रत्येक कार्यकर्ता में भी अतिरिक्त ऊर्जा प्रवाहित होती है, उत्साह का संचार होता है। यह कार्य तो रामजी का था। प्रत्येक कार्यकर्ता श्रीराम का दास, सेवक इसी भाव से जुड़ा था। उसे प्रत्येक घर में श्रीराम के दर्शन होना स्वाभाविक था।

– श्रीराम ने अपने सेवकों को किस–किस रूप में दर्शन दिया है, यह उन निधिसंकलनकर्ताओं के अनुभव पढकर समझा जा सकता है। प्रत्येक अनुभव रोमहर्षक, रोमांचित करनेवाला, अद्भुत और कभी–कभी आँखों में आँसू भर लानेवाला है। उन्हीं अश्रुपूरित आँखों से बस अब हमारे रामजी का विशाल, भव्य और नेत्रदीपक मंदिर यथाशीघ्र बनकर वहाँ हमारे आराध्य को हम विराजित करें इसी इच्छा से इस लेख को यहाँ विश्राम देता हूँ।

– श्री. विनायकराव देशपांडे
महामंत्री, विश्व हिंदू परिषद

पतंजलि में शौर्य संस्कार शिविर

''पतंजलि योगग्राम'' में भुवनेश्वरी व हेरंब सुरेशजी जाधव के मार्गदर्शन में रुद्र अकादमी एवं गीता परिवार सोलापुर शाखा द्वारा ''शौर्य संस्कार शिविर'' संपन्न।

पूज्य गुरुजी स्वामी गोविन्ददेदव गिरि जी महाराज तथा पूज्य स्वामी रामदेव बाबा जी के निर्देशपर गुढीपाड़वा से श्रीरामनवमी तक नौ दिन का **''शौर्य संस्कार शिविर''** हरिद्वार में संपन्न हुआ।

पतंजलि गुरुकुल के पांचवी से आठवी कक्षा के लगभग १००० विद्यार्थी तथा आचार्यकुल के चयनित आचार्यों के लिए आयोजित इस शिविर में आंतरराष्ट्रीय कराटेपटू एवं प्राचीन भारतीय युद्धकला कलरीपयतपटू भुवनेश्वरी तथा जापानी शस्त्रयुद्ध-कोबुडो एवं स्वसंरक्षण तंत्र के राष्ट्रीय प्रशिक्षक मिहिर सुरेशजी जाधव इन दोनों के प्रमुख मार्गदर्शन में रुद्र ॲकॅडमी ऑफ मार्शल आर्टस् अँड योग एवं गीता परिवार शाखा सोलापुर (महाराष्ट्र) के साक्षी तोरणगी, संपदा डागा, साक्षी सराटे, संस्कार कदम व संकेत धन्नाईक इन्होंने प्रशिक्षण दिया। शिविर की रचना रुद्र अकादमी की मुख्य संचालिका तथा गीता परिवार राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या श्रीमती संगीता सुरेशजी जाधव द्वारा की गयी थी।

प्रात:काल, मध्याह्न व सायंकाल प्रत्येकी दो घंटे के चार विभाजित सत्रों में प्राचीन भारतीय युद्धकला कलरीपयत के प्राथमिक युद्धतंत्र, जापानी कोबुडो शस्त्र प्रशिक्षण अंतर्गत बो लाठीकाठी और ननचाकु शस्त्र के आक्रमण प्रतिक्रमण के तंत्र, शारीरिक स्वसंरक्षण के प्राथमिक तंत्र इत्यादि विषयक शौर्य संस्कार का प्रशिक्षण दिया गया।

इस शिविर में मिहिर द्ववारा स्व. योगाचार्य सुरेशजी जाधव-रचित प्रज्ञासंवर्धन योग इस पंचतत्त्व कपालभाति से केवलकुंभक तक के प्राथमिक अभ्यासतंत्रों का प्रशिक्षण भी विद्यार्थिओं को दिया गया।

नववर्षारंभ के दिन उद्घाटनपर तथा श्रीरामनवमी के पावन मुहूर्तपर समापन में प्रत्यक्ष स्वामी रामदेव जी ने पूर्णकालीन उपस्थिति दर्शाकर सबका उत्साहवर्धन किया और शुभाशीर्वाद प्रदान किया।

'इंडिया टीव्ही', 'आस्था' तथा 'एबीपी माझा' इन राष्ट्रीय टीव्ही चॅनेलपर स्वयं स्वामीजी के साथ भुवनेश्वरी के नेतृत्व में शौर्य व योग के प्रात्यक्षिक का लाइव्ह प्रदर्शन हुआ, जो कि अत्यंत सराहनीय रहा।

गौरवास्पद वार्ता

पू. स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज के अनुमति से रुद्र अकादमी के सौजन्य से भुवनेश्वरी सुरेशजी जाधव के मार्गदर्शन में पतंजलि गुरुकुल तथा योग विद्यापीठ में निरंतर प्राचीन भारतीय युद्धकला कलरीपयत का प्रशिक्षण-केंद्र प्रस्थापित करने की घोषणा समापनपर स्वामी रामदेव बाबा जी ने की।

- श्रीमती संगीताताई जाधव

गीता परिवार महाराष्ट्र प्रांत द्वारा चलाया गया स्तोत्रसंथा-कक्षा अभियान।

हमारे भारतीय संस्कृति के उपासनाशास्त्र में बच्चों के लिए रामरक्षा एवम् स्तोत्रों का खजाना भरा पड़ा है। अपने इस खजाने से आनेवाली नयी पीढ़ी भी परिचित हो। कोरोना की महामारी के काल में लोगों में सकारात्मक विचार भी निर्माण हो और अपने पुराने अत्यंत महत्त्वपूर्ण खजाने से संस्कृत स्तोत्र से हमारे भारतीय संस्कृति के उपासनाशास्त्र में बच्चों के लिए बच्चे तथा बड़े परिचित हो इस उद्दिष्ट से गीता परिवार ने रामरक्षा एवम् विविध स्तोत्रसंथा कक्षा का शुभारंभ किया।

परम पूज्य स्वामीजी के कृपाशीर्वाद से एवम् आदरणीय डॉ. संजयजी मालपाणी की प्रेरणा से रामरक्षा स्तोत्रसंथा एवं विविध स्तोत्रसंथा- कक्षा चैत्र शुद्ध प्रतिपदा गुढीपाड़वा दि. १३ अप्रैल २०२१ को शुभारंभ किया गया। प्रथम सत्र का शुभारंभ राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आ. डॉ. संजयजी मालपाणी, और प्रकल्प प्रमुख श्री. देवेंद्रजी वैद्य आपने किया। दि. २१ अप्रैल २०२१ रामनवमी के दिन प.पू. स्वामीजी की उपस्थिति में आ. श्री. देवेंद्र जी वैद्य आपने रामरक्षा-संथा कक्षा प्रथम सत्र का समापन एवं रामरक्षा-संथा कक्षा के दूसरे सत्र का शुभारंभ आ. डॉ. सौ. विजयाताई गोडबोले ने किया।

दि. २६ अप्रैल २०२१ को श्री. हरिनारायण जी व्यास (उपाध्यक्ष- गीता परिवार दक्षिणांचल प्रमुख) ने किया। रामरक्षा एवम् विविध स्तोत्रसंथा कक्षा निरंतर चल रही है। अभियान के शुरुवात में एक ही मास में देश विदेश में ४००० लोगों तक/बालकों तक गीता परिवार पहुँच गया।

रामरक्षा एवम् विविध स्तोत्रसंथा कक्षा के लिए लोगों में बड़ी रुचि जागृत हुई और लोगों की माँग भी बढ़ने लगी। माँग इतनी बढी कि आज भी कई लोग प्रतीक्षा सूची में हैं। प्रथम और दुसरे सत्र की अपार सफलता के बाद भाविक विद्यार्थियों के आग्रहपर रामरक्षा के अलावा इतर भी जनोपयोगी छोटे स्तोत्रों की संथा शुरू करने का निर्णय लिया गया। स्तोत्रसंथा में प्रथम टेंबे स्वामी महाराज रचित-मंत्रात्मक मारुती स्तोत्र, श्रीगणेश पंचरत्न स्तोत्र, श्रीमहालक्ष्मी अष्टक, पांडुरंगाष्टक सिखाया जा रहा है।) इस अभियान के दौरान उल्लेखनीय बात यह रही कि यह सारा कार्य इतने वेग से आगे बढ़ा कि पढ़ाने हेतू प्रशिक्षक कहाँ से लाना यह बड़ा सवाल खड़ा हो गया। लेकिन महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के वेदविद्यालयों के विद्वत गुरुजन इस अपने प्रकल्प के साथ जुड गये इसलिए प्रशिक्षण को लेकर कोई कमी नहीं रही।

प्रशिक्षक, टेक्नीशियन, समन्वय कार्य करनेवाले सभी लोग सभी कार्यकर्ता अपनेआप जुड़ते चले गये और कार्य आगे बढता गया। जैसे की गुरुदेव कहते है, ''बस्स, कमल को खिलना है बाद में भ्रमर तो अपनेआप आ जाते हैं'' वही अनुभव इस अभियान दौरान हमें आज रामरक्षा के इस सेवा अभियान से जुटे १०० कार्यकर्ताओंसे आया।

बच्चों को बड़ों को भी रामरक्षा का सरल अर्थ समझ में आए और रामरक्षा कवच का ज्यादा से ज्यादा बच्चे लाभ उठा सकें इस दृष्टिकोण से हर रविवार को विवेचन सत्र भी रखा गया हैं। अबतक इन विवेचन सत्रों में आदरणीया श्रीमती जान्हवीजी केलकर, आदरणीय श्री. अशोक भैय्याजी पारीख, सौ. स्वातीजी वाळींबे, श्रीमती रेखाजी मुंदडा, श्री. प्रणवजी जोशी, श्री. प्रणवजी पटवारी इन्होंने किया और बच्चों को बहुत सरल भाषा में हनुमानजी एवम् रामरक्षा स्तोत्र की जानकारी दी।

इन सभी कार्यों में एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस अभियान के टेक्निकल का कार्य करने में जयसिंगपुर अर्जुन युवा मंच के युवा कार्यकर्ते विशाल जी एवम् अक्षय जी उनकी सारी टीम इस कार्य में बहुत बड़ा सहयोग प्रदान कर रही है। अर्जुन युवा मंच कि एक विशेषता यह भी है कि जयसिंगपुर में हर रविवार को किसी एक विभाग को चुनकर वहाँ यह सारे युवा 'स्वच्छताव्रती' बनकर रैली निकालकर किसी एक विभाग की स्वच्छता करते है।

– श्रीमती प्रमिला माहेश्वरी

पू. सद्‌गुरु एवं पूज्य रविशंकरजी के द्वारा गीता-संथा-वर्ग के नए सत्रों का उद्घाटन

गीता परिवार के द्वारा विश्व का सबसे बड़ा गीता-संथा-वर्ग संचालित किया जा रहा है। जहाँ अबतक १० मॉड्यूल आरम्भ हो चुके हैं, जिसमे ९५ देशों के १ लाख ८० हजार से भी अधिक गीताप्रेमी १० भाषाओं में गीता सीख रहे हैं, कंठस्थ कर रहे हैं। हमारा सौभाग्य है कि पूज्य स्वामीजी की कृपा से नये बॅचेस के उद्घाटन के लिए हमें सदैव विश्व के महानतम संतों का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

इसी क्रम में ९वें एवं १०वें बैच के उद्घाटन के लिए हमें क्रमशः प. पू. श्री सद्‌गुरु जी एवं प. पू. गुरुदेव श्री श्री रविशंकर जी महाराज एवं प. पू. स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरिजी महाराज का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। पूज्य सद्गुरु ईशा फाउंडेशन और पूज्य श्री श्री आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक हैं।

इनके साथ ही, डॉ. संजय मालपाणी (राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, गीता परिवार), डॉ. आशु गोयल (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, गीता परिवार) एवं श्री. हरिनारायण व्यास जी (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, गीता परिवार) की भी उपस्थिति ज़ूम के ऑनलाइन मंचपर रही।

कार्यक्रम का आरंभ प्रार्थना से हुआ, जो learn geeta के ही गीता कक्षा से जुड़े अलग-अलग देशों के साधकों के द्वारा की गयी, एवं गीता परिवार के बालकों द्वारा गुर्वष्टकम् पर सुंदर प्रस्तुति करके दीप-प्रज्वालन किया।

प. पू. स्वामीजी के साथ सद्‌गुरुजी का गीता को लेकर एक विशिष्ट प्रश्नोत्तर-संवाद भी हुआ, जो ३० मिनट तक लाइव ही चला एवं अत्यंत सुंदर संचालित हुआ।

सभी नये गीताप्रेमियों को सभी संतों के आशीर्वचन प्राप्त हुए, साथ ही श्लोकांक से ४ बालिकाओं की पूर्ण भगवद्गीता से परीक्षा भी हुई। श्रीमती सुवर्णा मालपाणी जी द्वारा १२वें अध्याय के दो श्लोकों का गायन कर कार्यक्रम का आरम्भ किया गया।

विश्वविक्रमी ई-संस्कार वाटिका

गत वर्ष से चल रही कोविड की त्रासदी ने इस वर्ष भी बच्चों को अपने विद्यालय, खेल के मैदान और मित्रों से दूर करके रखा हुआ है। इसी कारण गीता परिवार के ग्रीष्मकालीन संस्कारवर्गों का आयोजन इस वर्ष भी सम्भव नहीं हो पाया। अपने ३६ वर्षों के इतिहास में गीता परिवार की संस्कार-साधना कभी भी भंग नहीं हुई। कोविड लॉकडाउन के काल में पिछले वर्ष ई-संस्कारवाटिका (आभासीय संस्कारवर्ग) की संकल्पना की गयी और सफल आयोजन किया गया। ई-संस्कारवाटिका के गत वर्ष के प्रयोग को और भी बड़े लक्ष्य के साथ आयोजित करने का निर्णय इस वर्ष हुआ और देश-विदेश से दो लाख बच्चों की सहभागिता का उद्देश्य रखा गया। सहयोगी संस्थाओं की संख्या भी इस वर्ष बढ़ी और – अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन की किशोरी एवं बालविकास-समिति, वनबंधु परिषद महिला प्रकोष्ठ एवं विप्र फाउंडेशन महिला प्रकोष्ठ – इन संगठनों के सहयोग से ई-संस्कारवाटिका २०२१ का आयोजन किया गया।

भारत समेत ४३ देशों से ढाई लाख से अधिक बच्चों का सहभाग

पूज्य स्वामीजी ने हमें यही सिखाया है कि हमारा संस्कार-कार्य हमारी भगवद्भक्ति की ही अभिव्यक्ति है। हमारे वर्गों में आनेवाला हर एक बालक-बालिका श्रीकृष्ण का बाल-स्वरूप ही है। और इसी भाव से हम अपने कार्यों द्वारा उनकी सेवा करते हैं।

संस्कारों की वाटिका एक बार फिरसे सुरभित हो चुकी थी और अब प्रतीक्षा थी कि बालक-बालिकाओं के रूप में बालकृष्ण इस वाटिका में आएं। गीता परिवार की वरिष्ठ कार्यकर्ता श्रीमती निर्मला मारू जी के माध्यम से अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला मंडल, श्री हरिनारायण जी व्यास के माध्यम से विप्र फाउंडेशन और इसके साथ-साथ वनबंधु परिषद भी अब जुड़ चुके थे। गीता परिवार के साथ-साथ इन सभी संगठनों ने प्रचार

आरंभ किया। सौ. अंजली राजेन्द्रजी तापड़िया को संस्कारवाटिका २०२१ की संयोजिका का दायित्व दिया गया। विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को पत्र भेजकर इसमें जुड़ने का आह्वान भी किया गया। पंजीकरण का लिंक खुलते ही बड़ी संख्या में बच्चे जुड़ने लगे। भारत ही नहीं बल्कि विदेश से भी बड़ी संख्या में पंजीकरण होने लगा। ११४६ विद्यालयों ने सक्रिय सहभाग लिया और देखते ही देखते सहभागी बच्चों की संख्या पचास हजार..एक लाख.. दो लाख को पार कर गयी। ऐसा उत्साह देखने मिला कि संस्कारवाटिका के उद्घाटन तक ४३ देशों से कुल २,६७,००० बच्चों का पंजीकरण हो गया और एक अभूतपूर्व कीर्तिमान स्थापित हुआ।

नया वर्ष – नया पाठ्यक्रम

गीता परिवार जैसी संस्था देश में बहुत कम होंगी, जो ३५ वर्षों से केवल और केवल बालसंस्कार-कार्य के लिए कार्य कर रही है। गत ३५ वर्षों में समय भी बहुत बदल गया। बदलते समय के साथ नयी-नयी चुनौतियाँ भी आयी, बच्चों की रुचि बदल गयी किन्तु गीता परिवार का कार्य नहीं रुका क्योंकि हम बदलते समय के साथ स्वयं को बदलते रहे। बस, एक बात नहीं बदली और वह है हमारी पंचसूत्री।

संस्कारवाटिका के लिए पाठ्यक्रम ऐसा चाहिए था कि जो बच्चों को हर दिन जुड़ने के लिए प्रेरित कर सके और घर बैठे बच्चोंपर बिना किसी सीधे नियंत्रण के उन्हें प्रतिदिन एक घंटे के लिए संस्कारप्रद उपक्रमों से जोड़े रखना एक बड़ी चुनौती थी।

इस वर्ष की संस्कारवाटिका के लिए एक नया पाठ्यक्रम विकसित किया गया :-

सद्गुणों की साधना

पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरिजी ने जब गीता परिवार की स्थापना की तब अनेक वर्षों तक वे स्वयं प्रत्येक शिविर में उपस्थित रहते थे। किन्तु आगे जाकर व्यस्ततावश बाल-शिविरों में प्रतिदिन बच्चों के साथ रहना उनके लिए असम्भव होता गया। संस्कारवाटिका के बच्चे बड़े भाग्यशाली रहे कि उन्हें पूज्य स्वामीजी का नित्य सान्निध्य प्राप्त हुआ।

पूज्य स्वामीजी ने अपने प्रत्येक वीडियो में जीवन के लिए आवश्यक गुणोंपर बच्चों को संबोधित किया। पूज्यश्री जिस प्रकार आनंदित भाव से और सहजता से बच्चों को संबोधित करते, उसे देखकर ऐसा लगता कि जैसे वे प्रत्यक्ष हर एक बच्चे के सामने बैठकर उनसे वार्तालाप कर रहे हों। उनके मार्गदर्शक संबोधन से बच्चे इतना जुड़ गये कि दो-तीन दिनों के बाद बच्चों के अपने प्रश्न पूज्य स्वामीजी के लिए आने लगे। बच्चे स्वयं पूज्य स्वामीजी से अपने मन की जिज्ञासा प्रकट करते और फिर पूज्य गुरुदेव बहुत ही सरल शब्दों में बच्चों के प्रश्न का उत्तर भी देते और ऐसा करते हुए उनमें जीवनमूल्यों का बीजारोपण भी कर देते। पूज्य गुरुदेव का विशेष सत्र केवल बच्चे ही नहीं सुनते बल्कि अनेकानेक परिवारों में तो ये परिवार के एकत्र आकर पूज्य गुरुदेव को सुनने का एक पर्व ही बन गया।

जानो गीता बनो विजेता

गीता परिवार के कार्याध्यक्ष डॉ. संजयजी मालपाणी स्वयं ऐसे बाल-मनोवैज्ञानिक हैं, जिन्हें बच्चों के साथ संवाद साधने और उनके विषयों को समझने का दीर्घ अनुभव है। अपनी अद्भुत शैली में वे प्रतिदिन एक नया विषय लेकर बच्चों के सामने आते। भगवद्गीता के एक श्लोक को एक रोचक कथा के माध्यम से वे बच्चों के सामने रखते। उनके हर वीडियो में गीता से प्राप्त होनेवाला विजय का एक सूत्र छिपा होता था, जिसे वे बच्चों के दैनंदिन जीवन की चुनौतियों और कार्यकलापों से जोड़कर बच्चों को जीवन में सफलता प्राप्त करने का मंत्र देते थे। डॉ. संजयजी मालपाणी के इस सत्र से बच्चों को 'विजयी भव' का मंत्र तो मिला

ही साथ ही भगवद्गीता को और भी गहराई से समझने की प्रेरणा भी मिली।

संस्कारकथा

कहानियाँ बालसंस्कार का एक उत्तम साधन है। इस वर्ष की संस्कारवाटिका में भारत के महान बालकों एवं हमारे महान संतों के जीवनचरित्र प्रस्तुत किये गये। महाराष्ट्र के प्रसिद्ध कीर्तनकार श्री. चारुदत्त जी आफले, जो स्वयं गीता परिवार से अनेक वर्षों से जुड़े हुए भी हैं, उन्होंने संतों का जीवनचरित्र कथा के माध्यम से बच्चों के सामने रखा और सौ. रेखाजी मूंदड़ा ने महान बालकों के चरित्रपर कथाकथन किया। इसके अतिरिक्त पपेट-कहानियाँ भी प्रस्तुत की गयी जिसे सौ. अनुराधाजी मालपाणी और श्री. गिरीशजी डागा ने प्रस्तुत किया।

मनोरंजन

बच्चे बहुत देर तक बैठे-बैठे केवल सुनने का कार्य नहीं कर सकते। उनके हाथों को भी कार्य चाहिए। बच्चों के अंदर छिपी इसी रचनात्मकता को अवसर प्रदान किया सौ. अनुराधाजी मालपाणी ने। सौ. अनुराधाजी मालपाणी आर्ट-क्राफ्ट के सुरुचिपूर्ण कलाकृतियाँ प्रतिदिन लेकर आती और इस तरह सुंदर क्राफ्ट्स उन्होंने बच्चों को सिखाये।

ध्रुव ग्लोबल स्कूल, संगमनेर के छात्रों द्वारा विज्ञान के रोचक प्रयोग भी प्रस्तुत किये गये और गीता परिवार कार्यकर्ता श्री कुंदन जेधे ने जादू की तरकीबें बच्चों को सिखायी।

खेलो खेल के सत्र में सोलापुर के श्री. ओमजी दरक ने अपनी विशिष्ट शैली में श्री. अथर्व दरक के सहयोग से घर बैठे खेल बच्चों को खिलाये और संस्कार वाटिका को स्मरणीय बना दिया।

योग-व्यायाम

घर पे बैठे-बैठे बच्चों की शारीरिक गतिविधियाँ बिल्कुल ही बंद जैसी हो गयी हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह सही नहीं है। इसलिए Body-Brain Breath व्यायाम और योगासन के सत्र भी संस्कारवाटिका में समाविष्ट किये गय। सौ. संगीता सुरेशजी जाधव, भुवनेश्वरी और मिहिर जाधव ने Body-Brain-Breath व्यायाम का प्रशिक्षण दिया। हैदराबाद के गीता परिवार- सदस्य श्री. शैलेशभैया गुप्ता द्वारा निर्मित 'योग सोपान' अभ्यासक्रम के आधारपर ध्रुव ग्लोबल स्कूल के योग शिक्षक श्री. मंगेश खोपकर ने ध्रुव के ही छात्रों के माध्यम से योग का प्रशिक्षण दिया।

अमृतवाणी संस्कृत भाषा

संस्कृत के पाठान्तर से संस्कृत भाषा के प्रति उत्सुकता तो निर्माण होती ही है, साथ ही वाणी का संस्कार भी होता है। किंतु ऐसे अनेक बच्चे हैं, जिनकी वाणी को कभी संस्कृत में कुछ कहने का अवसर ही नहीं मिला। ऐसे बच्चे भी अपने घरपर संस्कृत पाठान्तर अवश्य करें, यही उद्देश्य था। इसके लिए इस वर्ष महिषासुरमर्दिनी स्तोत्र का चयन किया गया। ***'नटितनटार्धनटीनटनायक नाटितनाट्य सुगानरते'*** यह बच्चों के लिए tongue twister जैसी एक चुनौती थी। और जब आदरणीया सुवर्णा काकी मालपाणी ने अपनी मधुर वाणी में इसका उच्चारण किया तो उसमें एक अलग ही लय और ताल का आनंद आ गया। बच्चे स्वयं ही पीछे बोलने लगे। परिवार के सदस्यों में भी इस बात की होड़ लग गयी कि कौन कितना स्पष्ट और शुद्ध उच्चारण कर सकता है।

विशेष उपक्रम

भारत उत्सव-त्योहारों का देश है। किंतु आज के बच्चे केवल परंपरा के रूप में त्योहार मनाना नहीं चाहते बल्कि उनके पीछे के कारणों को भी समझना चाहते हैं। इसीको ध्यान में रखते हुए **'हमारे त्योहार'** नामक सत्र को प्रस्तुत किया पुणे की सौ. अंजली तापड़िया ने।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री. महेन्द्रजी काबरा द्वारा हेमा फाउंडेशन के माध्यम से निर्मित प्रेरक शॉर्ट फिल्में भी इस वर्ष की संस्कारवाटिका का एक मुख्य आकर्षण रही।

भारतीय पद्धति से जन्मदिन कैसे मनाएं इस विषयपर एक वीडियो सत्र बनाया गया। इसमें जन्मदिन-पद्धति, जन्मदिनगीत और इस पद्धति के पीछे के सकारात्मक और रचनात्मक लाभ को रोचक तरीके से बच्चों के सामने रखा गया। श्री. सचिन जोशी और श्री. क्षितिज माहोपात्रा ने इस वीडियो का निर्माण किया और प्रस्तुति की श्री. गिरीश डागा ने।

पूज्य स्वामीजी द्वारा रचित गीत 'सद्गुणों की साधना' का सुंदर वीडियो देखकर और गीत सुन-सुनकर बच्चे यह गीत दिनभर गुनगुनाते रहते।

प्रश्नमंजूषा

बच्चों का पंजीकरण तो उनके अभिभावकों ने कर लिया किन्तु यह भी आवश्यक था कि बच्चे नित्य प्रतिदिन इस कार्य से जुड़े रहें और पूरा ध्यान देकर मनोयोग से प्रत्येक गतिविधि में हिस्सा लें। इसके लिए प्रतिदिन प्रस्तुत होनेवाले विषयोंपर एक प्रश्नमंजूषा प्रतियोगिता रखी गयी। प्रतिदिन प्रस्तुत किये गये विषयोंपर आधारित कुल दस प्रश्न प्रतिदिन पूछे जाते और सभी प्रश्नों का सही उत्तर देनेवाले बच्चों में से १०० बच्चों को पुरस्कृत किया जाता। प्रश्नमंजूषा की प्रश्नावलि बनाने का कार्य श्री. गिरीश डागा ने किया।

प्रत्येक घर बना संस्कार केंद्र

गीता परिवार के संस्कारवर्गों में बच्चे आते हैं, पालक नहीं। संस्कारवर्ग के बारे में अभिभावक उतना ही जानते हैं जितना बच्चे उन्हें बताते हैं। संस्कारवाटिका की एक खूबसूरती यह भी रही कि ४३ देशों के २ लाख ६७ हजार बच्चों के साथ-साथ उनके परिवार के सदस्योंने भी गीता परिवार के कार्यों को प्रत्यक्ष देखा। देखा ही नहीं बल्कि उसमें सम्मिलित भी हुए। जो कार्य केंद्रपर कार्यकर्ता बंधु-भगिनी करते हैं, लगभग वही कार्य घर-घर में प्रत्येक माता-पिता या दादा-दादी ने किया। इस उपक्रम ने प्रत्येक घर को एक संस्कारकेंद्र बना दिया।

इस वर्ष संस्कारवाटिका में जितनी विशाल संख्या में बच्चों ने भाग लिया उसके लिए प्रगत और नवीनतम तकनीक का प्रयोग अत्यंत आवश्यक था। इस मोर्चे को संभाला युवा कार्यकर्ता श्री. यशोवर्धन संजय मालपाणी ने। उन्होंने इसके लिए एक विशेष टीम बनायी और श्री. यशोवर्धन मालपाणी के नेतृत्व में इस टीम ने संस्कारवाटिका को देश-विदेश में घर-घर पहुँचा दिया। सौ. अंजली राजेन्द्र तापड़िया ने संस्कारवाटिका २०२१ की 'संयोजिका' के रूप में विद्यालयों, अभिभावकों तथा सहयोगी संस्थाओं के साथ संवाद - समन्वयन का कार्य किया। संस्कारवाटिका में सम्मिलित सभी बच्चों के साथ निरंतर संपर्क और संवाद बनाये रखने के लिए उनको अलग-अलग whatsapp समूह में विभाजित किया गया। ऐसे कुल ४८६ व्हाट्सएप्प समूह बनाये गये और सभी आयोजक संस्थाओं के कुल १०६४ कार्यकर्ताओं ने इन समूहों का संचालन किया और श्री दत्ता भांदुर्गे, श्री. नीलेश पठाड़े, श्री. प्रसाद शेटे, श्री. प्रतीक भांदुर्गे एवं श्री स्वप्निल गायकवाड़ ने इन सभी समूह के साथ समन्वयन का कार्य किया। ध्रुव ग्लोबल स्कूल के अनेक शिक्षकों ने बच्चों के व्हाट्सएप्प समूह बनाने में सहायता की।

इस प्रकार पूज्य स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी की प्रेरणा से गीता परिवार ने संस्कारवाटिका के सुरभित सुमनों की माला पिरोयी और भगवान् श्रीकृष्ण एवं भारतमाता को समर्पित की।

– गिरीश डागा, संगमनेर

वेदविद्यालय गतिविधि

''श्रीराम जन्मभूमि मंदिरनिर्माण-निधिसमर्पण'' हेतु विश्व हिंदू परिषद-चित्तौड प्रांत द्वारा ३ जनवरी २०२१ को विद्यालय पुष्कर में 'संतसम्मेलन' का आयोजन किया गया, जिसमें शताधिक (सौ से अधिक) संत महानुभावों का पदार्पण हुआ।

महामण्डलेश्वर पूज्य श्री हंसाराम जी महाराज (भीलवाडा) ने मंदिरनिर्माण हेतु धनसंचय करने के लिए सबसे आग्रह किया। इस अवसरपर संत श्री दिव्य मुरारी बापू (पुष्कर), साध्वी अनादि सरवस्ती (अजमेर), आदि बडे-बडे संत महात्मा उपस्थित रहें।

विद्यालय वार्षिकोत्सव

प्रतिवर्षानुसार विद्यापीठ, पुष्कर का वार्षिक-उत्सव इस वर्ष भी शिवरात्रि महापर्व के शुभ अवसरपर दिनांक ११ मार्च २०२१ को कोविड के कारण सामान्य रूप से मनाया गया। इस अवसरपर मुख्यातिथि के रूप में अजमेर जिला के **डी.आई.जी. श्री एस. सिंगायिर जी** का आगमन हुआ था। कार्यक्रम के दौरान इस वर्ष विद्यालय का सप्तवर्षीय पाठ्यक्रम पूर्ण करनेवाले (शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन संहिता पूर्ण) १५ वैदिक छात्रों का सम्मान किया गया। इस अवसरपर विद्यालय के सचिव- श्री संदीप जी झंवर एवं कोषाध्यक्ष- श्री. अशोकजी कालानी आदि विशेष महानुभाव उपस्थित रहें।

संत-समागम

हम सबका अहोभाग्य है कि 'ब्रह्मधाम-आसोतरा' -आसोतरा पीठाधीश्वर परम पूज्य संत श्री भौमराम जी महाराज का विद्यालय-पुष्कर में शुभागमन १९ मार्च को, परम पूज्य तपोनिष्ठ संत श्री विद्यानृसिंह भारती जी महाराज (उडुपी-कर्नाटक) का शुभागमन २१ मार्च को तथा गोधाम-पथमेडा पीठाधीश्वर परम पूज्य गोऋषि संत श्री दत्तशरणानंद जी महाराज का शुभ पदार्पण ९ अप्रैल २०२१ को हुआ। तीनों संत महानुभावों ने विद्यालय में निवास करते हुए परिसर का अवलोकन किया तथा वेदपाठी छात्रों को अच्छे मार्गपर जाने हेतु मार्गदर्शन दिया।

विभिन्न परीक्षाएँ

प्रतिष्ठान के वेदविद्यालयों में परंपरागत वेदाध्यन के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा भी प्रदान की जाती है। पिछले साल से कोरोना के संकट के कारण विद्यालयीन गतिविधियों में कुछ आह्वान हमारे संमुख खड़े रहे। पर उन सारे आह्वानों को पार करके विद्यार्थीओंका ऑनलाइन अध्ययन सुचारु रूप से चलता रहा। साथ में नियमित परीक्षाओं के अतिरिक्त भारतभर में होनेवाले अनेक परीक्षाओं में विद्यार्थिओंने भाग लेकर उत्तम प्रवीणता प्राप्त की। गत वर्ष हमारे पिरंगुट वेदविद्यालय के ७ छात्रों ने १० वी एवं ५ छात्रोंने १२ वी कक्षा की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की।

वेदश्री तपोवन

प्रतिष्ठान की महत्त्वाकांक्षी योजना वेदश्री तपोवन का काम अब लगभग पुरा हो चुका है। अक्षय तृतीया के दिन वेदश्री पर वे.मू.श्री. महेश नंदे गुरुजी के हाथों वास्तू में गणेश पुजन करके वास्तू गणेश की स्थापना हो चुकी है। धीरे-धीरे वहाँपर गतिविधियाँ शुरू करने का प्रयास हो रहा है। बस, अंतिम कुछ शेष काम कोरोना लॉकडाउन के कारण बचे हैं। इसे जल्द से जल्द पुरा करके शीघ्र ही दिवाली से पहले वहाँ अध्ययन शुरू होगा।

कोविड टीकाकरण सत्य और मिथ्य

१) हम टीका क्यों लगायें?

उ.- हमें और दूसरों को संसर्ग न होकर गंभीर परिस्थिति उत्पन्न न करने के लिए।

२) टीकाकरण की कार्यक्षमता कितनी है?

उ.- सामान्य कोरोना में उच्च कार्यक्षमता एवं दीर्घ काल तक रोगप्रतिकारक क्षमता को टीकाकरण बढ़ाता है।

३) हमें कौनसा टीका लगवाना चाहिए?

उ.- आप कोविशिल्ड या कोव्हॅक्सिन इन दोनोंमें से कोई भी टीका लगवा सकते हैं। दोनों भी टीके उच्च गुणवत्ता और जागतिक मानांकन निकष को पूरा करती है।

४) मुझे टीका कैसे मिलेगा?

उ.- प्रथम आपको कोविन या दूसरे टीकाकरण ॲपपर अपने नाम का रजिस्ट्रेशन करना पड़ेगा फिर आपको संदेश द्वारा सूचना मिलेगी।

५) टीका लगवाने के बाद क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं?

उ.- टीका लगवाने के बाद मामुली से लक्षण दिखते हैं जैसे कि हल्का-सा बुखार, सिरदर्द, बदनदर्द, उल्टी की संभावना, थोड़ी कमजोरी इ. लेकिन यह सारे लक्षण आपके शरीरपर व्हॅक्सिन के कारण आपकी रोग प्रतिकारशक्ति कार्यान्वित होने के प्रमाण है।

६) टीकाकरण से पहले हम क्या तैयारी करें?

उ.- टीका लगवाने से पहले आपका पेट खाली नहीं होना चाहिए। भर पेट खाकर टीका लगाने के लिए जाना चाहिए। जाते समय साथ में पानी बोतल, बिस्कीट, निंबू शरबत साथ लेवें।

७) कॅन्सर, ह्रदयरोग, मूत्रपिंड, इत्यादि गंभीर बीमारी वाले लोग टीका लगवा सकते है?

उ.- १००% हाँ। ऊपरी सारे गंभीर बीमारी से त्रस्त लोगों को पहले टीका लगवाना चाहिए। लेकिन टीका लगवाने से पहले अपने चिकित्सक से परामर्श जरूर ले।

८) मुझे अभी तक कोरोना नहीं हुआ फिर भी मुझे टीका लगवाना चाहिए?

उ.- बिल्कुल लगवाना चाहिए क्योंकि इससे आपकी रोगप्रतिकारशक्ति बढ़ने में मदत होगी।

९) छोटे बच्चे या गर्भवती महिलाओं को टीका लगवाना चाहिए?

उ.- अभीतक सरकारने इसकी अनुमती नहीं दी है। इसके बारे में कोरोना का संकट देखते हुए व्हॅक्सिन कंपनी इस बारे में सरकार को जानकारी देकर समय-समयपर निर्णय ले सकते हैं। अभी तो इन्हें टीका लेने के लिए मनाई है।

१०) क्या टीका लेने के बाद हम मास्क लगाना छोड़ सकते हैं?

उ.– नहीं! टीका लगवाने के बाद भी आपको कोरोना के विषाणुओं से १००% सुरक्षित रहने के लिए मास्क लगाना, सॅनिटायझर आदि उपयोग करते रहना चाहिए।

११) टीका लगवाने के बाद भी अगर कोरोना होता है तो टीकाकरण हम क्यों करें?

उ.– १) कोरोना की तीव्र बाधा रोखने के लिए।
२) कोरोना के आनेवाले दौरों को टालना।
३) अत्यवस्थ रुग्णों का प्रमाण कम करना।
४) देश का मृत्युदर कम करना।

१२) कोरोना होने के पश्चात् भी हमें टीका लगवाना चाहिए क्यों?

उ.– क्योंकि कोरोना होने के पश्चात् कुछ समय बाद हमारी प्रतिकारक्षमता (अॅन्टीबॉडीज) नष्ट होती हैं। टीकाकरण से उसी प्रतिकार क्षमता को दीर्घ काल तक बढाया जाता है।

१३) टीकाकरण के कितने दिनों पश्चात हमारे शरीर में प्रतिकार क्षमता बढती है?

उ.– पहला डोस लेने के बाद 45 दिन में रोगप्रतिकारशक्ति तैयार होती है। इसलिए 45 दिन के बाद दूसरा डोस लेना अनिवार्य है।

हे हनुमंत!

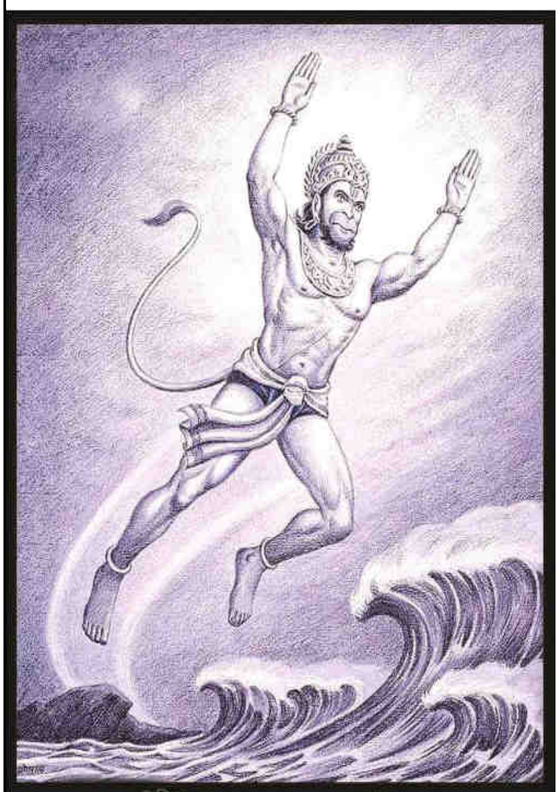

ईश कपीश महेश गुणाकर
वीर सुधीर अजेय महान !
राघवसेवक सुंदर सायुध
नीतिनिपुण बल–बुद्धिनिधान !!

दीनबंधु सज्जनसुखदायक
दयासिंधु भगवन् हनुमान !
दिनमणिभक्षण–आतुर मारुति
दिग्गजगर्जित तव गुणगान !!

दशमुखदर्पदलन अघमोचन
संकटमोचन चतुर सुजान !
सीताशोकरसायन पावन
हरिवर चिरतर–आयुष्मान !!

रामनामरसपाननिरत नित
सकलकलाकोविद विद्वान् !
खलदलदावानल अनिलात्मज
आंजनेय तव हो गुणगान !!

विपदाओं से घिरे सभी हम
चरणाश्रय दो पवनकुमार !
हे रघुनंदन के चरणाश्रित
शरणागत तव उमाकुमार !!

– प्रणव जनार्दन पटवारी

विश्वकल्याणार्थ वेद-पारायण

अपार हर्ष का विषय है कि इस वर्ष प्रतिष्ठान के पिरंगुट, रेवदंडा और पुष्कर वेदविद्यालय में विश्वकल्याणार्थ कंठस्थ वेद-पारायण का आयोजन समय-समयपर किया गया। विद्यालय में वेदाध्ययन पूर्ण करनेवाले छात्रों ने शुक्ल-यजुर्वेद माध्यन्दिन संहिता, सामवेद संहिता, ऋग्वेद संहिता का बिना किसी त्रुटि के कण्ठस्थ सस्वर पारायण किया। इन पारायणों की सफलता के बाद प्रतिष्ठान के विद्यालयों ने भारत में आयी इस महामारी के निवारणार्थ १०८ कंठस्थ वेदों के पारायण का संकल्प लिया।

॥ श्रीहरिः ॥

प.पू. स्वामी श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज के

✻ आगामी कार्यक्रम ✻ ई. स. २०२१

दिनांक	स्थान	कार्यक्रम
१३-०७ से १५-०७	दिल्ली (प्रशांतविहार)	गुरुपूजा/प्रवचन
१६-०७ से २३-०७	स्वर्गाश्रम (उत्तराखंड)	गीता-साधना-शिविर
२४ जुलाई	स्वर्गाश्रम (उत्तराखंड)	गुरुपूर्णिमा व्यासपूजा
२५-०७ से ११.०८	स्वर्गाश्रम (उत्तराखंड)	श्रावण-कथा

✻ अयोध्या श्रीराम मंदिर कार्य की विशेष स्थिति में कार्यक्रम में परिवर्तन की संभावना रहती है। ✻

✻ **साधना शिबिर में इस वर्ष संख्या बहुत सीमित रखी जाएगी।**

✻ **दि. १६ जुलाई से ११ अगस्त तक स्वर्गाश्रम के तीनों कार्यक्रम निश्चित ही है। फिर भी वातावरण और विभिन्न सरकारोंके नियम अनिश्चितता के कारण कुछ परिवर्तन भी संभव हैं। उसकी सूचना यथासमय आपको पहुँचाई जाएगी।**

✻ **कृपया ६५ वर्ष से अधिक आयुवाले आवेदन पत्र नहीं भेजें।**

-: संपर्क :-

श्री. हनुमानजी सारस्वत : 9420131000 **श्री. दत्ताजी खामकर :** 7709103293

कार्यालय संपर्क :- धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंट्स, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे- 411016

कार्यालय दूरभाष :- (020) 25652589 / 9423005027

सादर श्रद्धांजलि

पू. स्वा. माधवानंदजी

धरा धाम तज स्वर्ग सिधारे
साथी, प्रेमी, परिचित जन ।
असमय विरह अचानक सबका
क्रंदन करता व्याकुल मन ॥

पू. स्वा. देवमित्रानंद गिरि जी

पू. स्वा. ब्रह्ममित्रानंदजी

पू. स्वा. ब्रह्मानंदजी

आ. शंभूनाथजी

आ. प्रेमा पांडुरंग

आ. मथुरादेवी एवं
घनश्यामलालजी पाटोदिया

आ. वा. ना. अभ्यंकरजी

व्याकरणाचार्य मोहनजी शर्मा

आहिताग्नि वे.मू. केतनजी काले

वे. मू. भार्गव काले

आ. हरीचंदजी सिंगला

आ. माधवजी विप्रदास

वे. मू. रामजी देव

वे. मू. अजित शिरोडकर

श्रीमती नीला भांगडिया

श्रीमती सीतादेवी गुप्ता

श्रीमती हर्षदा जोशी

श्रीमती मधुरा महेश रेखे

श्रीमती अश्विनी भास्कर जोशी

मधुर स्मृतियाँ सदा रहेगी
प्रभु इच्छा स्वीकार करें ।
भाव–श्रद्धांजलि अर्पित है
ईश्वर शांति प्रदान करें ।।

स्वामी गोविंददेवगिरिः

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान - दानदाता सूची

(दिनांक ०१/०७/२०२० से दिनांक ३१/०३/२०२१ तक)

✻ १ लाख एवं उससे अधिक ✻

पुणे: मे. स्टरलाईट टेक फाउंडेशन, श्रीनाथ म्हस्कोबा कारखाना लि., श्री. मुकुंद भवन ट्रस्ट, **पटियाला:** श्रीमती. नवनीत मल्होत्रा, **दिल्ली:** श्रीमती शांता कौशिक, **कोलकाता:** कोटरीवाला सेवा निधि, मे. जे. जी. होजीअरी प्रा. लि., **अहमदनगर:** मे. बजाज पॉवर इक्विपमेंट, **संगमनेर:** मे. सरगम रिटेल्स प्रा. लि., **मुंबई:** श्री. भागीरथजी लड्डा, श्री. संदीपजी लड्डा, श्री. मनीषजी लड्डा, श्री. आनंदजी राठी फाउंडेशन, श्री. गोपालजी रमेशजी काबरा, श्री. रामेश्वरलालजी काबरा (एच. यू. एफ.), मे. आर. आर. केबल्स लि. श्री. महेंद्रजी काबरा, श्री. आनंदजी राठी इन्श्युरंस ब्रोकर्स, श्रीमती विभा रेगे, मे. आदित्य बिर्ला कॅपिटल फाउंडेशन, श्री. नंदकिशोर राठी मेडिकल अँड एज्यु. ट्रस्ट, **पानिपत:** श्री. अमितजी गोयल, **कोईम्बतूर:** श्री. आलोकजी अग्रवाल, **हैद्राबाद:** माय होम इंडस्ट्रीज प्रा. लि., **औरंगाबाद:** श्री. सुनिलजी माछर परिवार, **इंदौर:** मे. डी.टी. इंडस्ट्रीज लि., **बड़ौदा:** मे. एम. ई. डब्लू इलेक्ट्रिकल्स, **गुडगांव:** श्रीमती कुसुम माहेश्वरी, **दादरा:** मे. रामरत्ना वायर्स लि.

✻ रु. ५० हजार से १ लाख ✻

बेळगांव: कु. अस्मिता पवार, **नॉयडा:** श्रीमती शिल्पि मुद्गल, **दिल्ली:** श्री. विवेकजी गुप्ता, श्री. सुभाषचंद्रजी तलवार, मे. बी. एम. ऑईल्स प्रा. लि., **मुंबई:** श्री. गोरक्षनाथजी पैठणकर, **कोलकता:** मे. चितलांगिया चॅरि. ट्रस्ट, **मंदसौर:** डॉ. श्री. एन. पी. शर्मा, **ठाणे:** श्री. भरतजी नाईक, **जयपुर:** श्री. गगनजी हंसारिया, श्री. अशोकजी कालानी, **मालेगांव:** श्रीमती जानकाबाई डी. काला माहेश्वरी चॅरि. ट्रस्ट, **अहमदाबाद:** श्रीमती अरूणा वणिकर, **सेलू:** श्रीमती सावित्री बिहाणी, श्री. विजयकुमारजी बिहाणी, श्रीमती कमला बिहाणी, श्री. अविनाशजी बिहाणी, **पुणे:** श्री. अरविंदजी नवगिरे, श्रीमती मोनिका सारस्वत, श्री. बालाप्रसादजी सारस्वत, श्री. गोपालजी वैद्य, जय भवानीगड विकास प्रतिष्ठान, **अहमदनगर:** श्री. अभयजी भंडारी, **जालना:** श्री. जगदीशजी राठी, **आलंदी:** श्री. भगवानजी जोशी, **भिलवाडा:** दादी माँ भंवरबाई ट्रस्ट, **नागपुर:** मे. मालू इलेक्ट्रीकल्स,

✻ रु. २५ हजार से ५० हजार ✻

नागपुर: श्री. अविनाशजी संगमनेरकर, **चेन्नई:** श्रीमती सुरुची चौधरी, श्री. संदीपजी चौधरी, श्री. जयजी चौधरी, श्री. शुभांगजी चौधरी, श्रीमती दिव्या चौधरी, **दिल्ली:** श्री. अमितजी गुप्ता, **यवतमाळ:** श्री. वसंतरावजी राशतवार, **अहमदाबाद:** श्री. एस. आर. देसाई, **सोलापुर:** श्री. बाबूलालजी तोष्णीवाल,

✻ रु. १० हजार से २५ हजार ✻

ठाणे: श्री. विशालजी कमलकिशोरजी, **दिल्ली:** श्री. आदितजी सुनेजा, श्री. सत्येंद्र कुमारजी, श्रीमती शशिबाला शर्मा, श्रीमती सावित्री ग्रोवर, श्रीमती चंद्रकांता गुलाटी, श्री. अनिलजी टंडन, श्रीमती रेणु शर्मा, श्रीमती मंजु शर्मा, श्री. राकेशजी गुप्ता, श्री. मुकुलजी अवस्थी, **जोधपुर:** श्रीमती सुशीला लोहिया, श्री. शामसुंदरजी लोहिया, **इंदिरापुरम्:** श्री. गोपालचंद्रजी गोविल, **अकोला:** श्रीमती नीला कोंडोलीकर, **चंद्रपुर:** श्री. मुकुंदजी गांधी, **धमतरी:** श्री. हरिशजी गांधी, **पानिपत:** श्रीमती विमल बंसल, **अमरावती:** श्रीमती उमादेवी गुप्ता, **बंगलोर:** श्री. जगदीशजी झा, **लखनौ:** श्रीमती पुष्पा शर्मा, **अहमदनगर:** मे. ओम साई एंटरप्राईजेस, मे. श्री जी डिस्ट्रीब्यूटर्स, **औरंगाबाद:** श्री. सचिनजी पाठक, श्री. वेणुदासजी कुलकर्णी, **रायगड:** श्री. संजयजी तावरे, **सोलापुर:** श्री. राजगोपालजी मिणियार, **पुणे:** श्रीमती वेदिका कुलकर्णी, श्री. प्रभाकरजी तबीब, श्रीमती शोभना गुर्जर, श्रीमती मृणाल विप्रदास, श्री. अनिकेतजी जोशी, श्रीमती शुभदा कुलकर्णी, श्रीमती नीलमताई गोऱ्हे, श्री. राधाकृष्ण कुलकर्णी, श्रीमती रेवती कुलकर्णी, श्री. विशालजी सोनी, श्री. श्रीपादजी देशमुख, श्री. नरेंद्रजी भेडा, **सेलू:** श्री. जयप्रकाशजी बिहाणी, श्री. **नागपुर:** श्रीनिवासजी वर्णेकर, श्रीमती क्षमा खांडवेकर, श्रीमती अलका कर्दळे, **मुंबई:** इला राजेश फाउंडेशन ट्रस्ट, श्री. राजेशजी रमेशचंद्रजी, श्री. सूर्यकांतजी लखोटिया, **सूरत:** श्री. नीरवजी ध्रुव, **कोटा:** श्री.दिनेशजी उपाध्याय, **जबलपुर:** श्री. जितेंद्रजी जामदार, **कोलकाता:** श्री. विश्वनाथजी राठी, श्रीमती माधुरी राठी

✻ रु. ५ हजार से १० हजार ✻

लखनौ: श्रीमती निशा अग्रवाल, **अहमदनगर:** श्री. मुकेशजी पल्लोड, **दिल्ली:** श्री. देवेंद्रजी दुग्गल, श्रीमती सुरभी मनचंदा, श्री. प्रद्युम्नजी गुप्ता, श्रीमती रजनी शर्मा, **परभणी:** श्रीमती गंगादेवी मणियार, **औरंगाबाद:** श्रीमती शोभा मालानी, श्रीमती प्रीती असावा, **दरभंगा:** श्री. शारदानंदजी झा, **कानपुर:** कु. अनुराधा, **नॉयडा:** श्री. गोपालजी वशिष्ठ, श्रीमती सुदेश बंसल, **हैद्राबाद:** श्रीमती सुशीला दरक, श्रीमती शीला कुलकर्णी, **चंडिगढ़:** श्रीमती निर्मल मित्तल, **रायगड:** श्री. संजयजी तावरे, **अमरावती:** श्रीमती तेजस्विनी ठाकरे, **बिकानेर:** श्रीमती रामेश्वरी पारिक, **मुंबई:** श्रीमती शैली मेहता, श्री. दिलीपजी भराडिया, श्री. पंकजाक्षनजी नायर, **पुणे:** श्री. धवलजी रसाल, डॉ. श्री. प्रकाशजी सोमण, श्रीमती छाया सोमण, श्री. दुर्गादासजी देशमुख, श्री. कौशलजी देशमुख, श्रीमती सोनल मुंदडा, श्रीमती संतोषी मुंदडा, श्रीमती शुभांगी निलंगेकर, श्री. सुधाकरजी पानसरे, श्रीमती मधुरा माणगांवकर, श्रीमती महानंदा पाटील, श्रीमती सुनिता पंडित, श्री. सत्यनारायणजी मुंदडा, श्रीमती जयश्री देशमुख, **इंदौर:** श्री. कृष्णकांतजी उपाध्याय, **अंबाला:** श्री. हिमांशु गुप्ता, **नांदेड:** श्रीमती कुसुम चक्करवार, श्री. भागीरथजी मुंदडा, **यवतमाल:** श्रीमती पुष्पा पांडे, **लातूर:** श्री. हरिप्रसादजी सोमाणी, श्री. संतोषजी शर्मा, **बीड:** श्री. आसारामजी मानधना, श्री. त्रिंबकदासजी झंवर, **नागपुर:** श्रीमती सुचेता पांडे, श्री. अविनाशजी बेंद्रे, **ठाणे:** श्रीमती वंदना प्रदीप कुमार, श्रीमती संध्या भालेराव, **शाहजहाँपुर:** श्री. ओमप्रकाशजी बिहाणी, **सोलापुर:** श्री. मयूरजी भुतडा, **कर्नाल:** श्री. ईश्वरजी दयाल

भावांजलि

परम वैष्णव आदरणीय नारायणदासजी मारु

'नारायण' के अनन्य सेवक
सदा कथा-सेवन की प्यास ।
वैष्णवभूषण गृही संत
वैकुंठ चले 'नारायणदास' ।।

प्रगाढ आस्था गंगाजी में
सुदृढ-हरि-गुरु-भक्ति अपार ।
ललक सदा ही संत मिलन की
दान-धर्म में परम उदार ।।

श्रद्धांजलि लो साश्रु महात्मन्
पुनः लौट जलदी आना ।
वेद-धर्म की ध्वजा उठाकर
संतरूप दर्शन देना ।।

स्वामी गोविंददेवगिरि:

"DHARMASHREE" Periodical - Quarterly
Posted under P.O. clause No. 129 Regn. No. MAHHIN/2001/4041

ॐ वयं राष्ट्रे जागृयाम ।

॥ वेदश्री तपोवन ॥

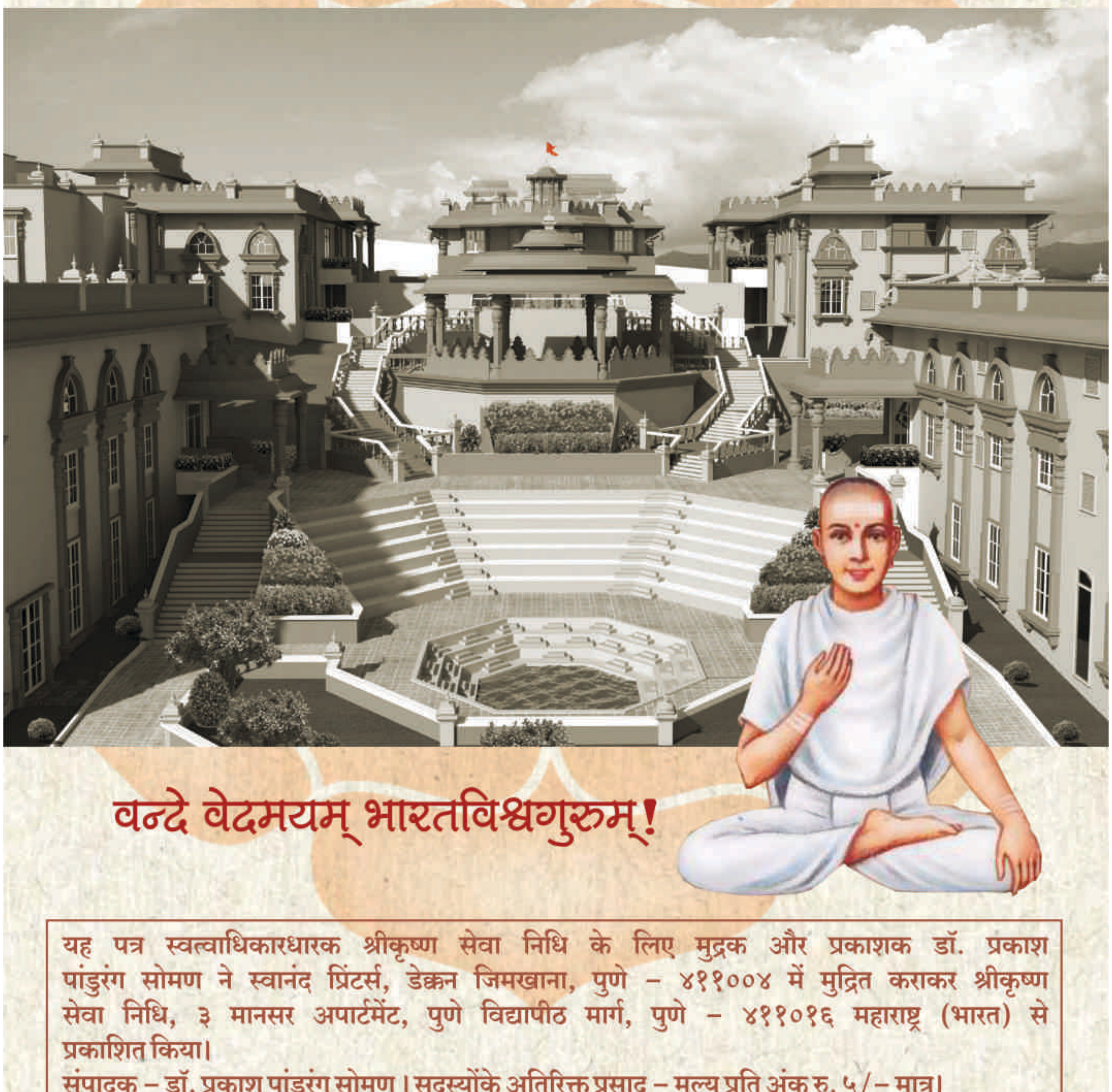

वन्दे वेदमयम् भारतविश्वगुरुम्!

यह पत्र स्वत्वाधिकारधारक श्रीकृष्ण सेवा निधि के लिए मुद्रक और प्रकाशक डॉ. प्रकाश पांडुरंग सोमण ने स्वानंद प्रिंटर्स, डेक्कन जिमखाना, पुणे – ४११००४ में मुद्रित कराकर श्रीकृष्ण सेवा निधि, ३ मानसर अपार्टमेंट, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे – ४११०१६ महाराष्ट्र (भारत) से प्रकाशित किया।
संपादक – डॉ. प्रकाश पांडुरंग सोमण। सदस्योंके अतिरिक्त प्रसाद – मूल्य प्रति अंक रु. ५/– मात्र।